मेरीखेती

अगस्त, 2024 | मूल्य : रु49

www.merikheti.com | YouTube

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान	01 - 08
बागवानी फसलें	09 - 14
पशुपालन–पशुचारा	15
मशीनरी	16 - 21
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	22 - 25
सरकारी नीतियां	26 - 28
प्रगतिशील किसान	29 - 31

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

खेती में नवाचारों को गृहण

धान गेहूं फसल चक्र वाले क्षेत्रों में खेती में नवाचार, अधिक आय अर्जन के नवीन विचार परवान नहीं चढ़ पा रहे हैं । युवाओं का एक तो खेती में यूं ही रुझान सालों से कम है वहीं खेती, श्रम और स्वरोजगार जैसे झंझावातों में युवा पीढ़ी जीवन निर्वाह की राह खोज रही है। जहां धान की खेती होती है वहां कम पानी वाली अन्य फसलों की संभावनाएं खत्म हो जाती हैं।

किसी दौर में खेती को सबसे अच्छा काम माना जाता था। अकेले खेती से ही एक पिता भरे पूरे परिवार का बेहद कम संसाधन, उसके सापेक्ष सामान्य उत्पादन होने के बावजूद भरण –पोषण कर पता था लेकिन आज परिवार के कई कई सदस्यों के काम करने के बाद भी आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पातीं। देश की जीडीपी में कृषि का योगदान भले ही 16 प्रतिशत हो लेकिन आज भी कृषि क्षेत्र से देश की आधी आबादी की आजीविका सीधे तौर पर जुड़ी है।

देश की कुल आबादी का बड़ा हिस्सा युवा है। करीब 37 करोड़ युवाओं वाले देश में अपार संभावनाओं वाले कृषि क्षेत्र में मोदी सरकार के दो कार्यकाल में अनेक प्रयासों के बाद भी युवा खेती की तरफ नहीं मुडे। बढ़ती आबादी का पेट भरने के लिए खाद्यान्न, फल आदि की जरूरत को ध्यान में रखते हुए कुछ आईआईटीयंस ने जरूर खेती की तरफ रुख किया और संभावनाओं से भरे इस क्षेत्र में पहचान बनाई।

पिछले कुछ सालों से धान की अच्छी कीमतें मिलने से किसानों का रुझान धान की खेती की तरफ बढ़ा है। इसका प्रतिकूल प्रभाव आसपास के क्षेत्र में नवाचार से प्रेरित किसानों द्वारा नए तरीके की खेती की संभावना घटी है। जहां धान की फसल होती है वहां कम पानी वाली फल, सब्जी, दाल, बाजरा आदि अनेक फसलें नहीं हो पातीं। इन हालात के चलते अन्य फसलों के नवाचार खेती में अमल में नहीं लाए जा सकते।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

मेरीखेती अब 6 भाषाओ में उपलब्ध है

हिंदी | English | తెలుగు (Telugu) | ಕನ್ನಡ (Kannada) | ਪੰਜਾਬੀ (Punjabi) | தமிழ் (Tamil)

www.merikheti.com

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

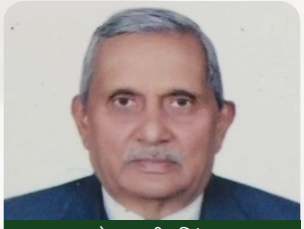

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

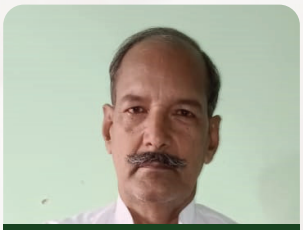

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

धान की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उनका नियंत्रण

धान की खेती भारत में खरीफ के मौसम में बड़े पैमाने पर की जाती है। भारत में धान की बुवाई बड़े क्षेत्र में की जाती है। अन्य देशों में धान की उपज में वृद्धि हो रही है जो की हमरे देश में बहुत कम है। धान की उपज कई कारकों से प्रभावित होती है जिन में से सबसे बाद कारक है इसमें लगने वाले खतरनाक रोग, फसल में रोगों के प्रभाव के कारण उपज आधी से भी कम होती है। इसलिए आज के इस लेख में हम आपके लिए धान के रोगों से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी लेके आए है, जिससे की आप समय रहते इन रोगों को पहचान कर इनका उपचार कर सकते है।

1.भूरा धब्बा रोग

ये रोग हेलमिनथोस्पोरियम ओरायजी जीवाणु के कारण होता है जो की फसल की उपज को बहुत प्रभावित करता है। इस रोग के लक्षण पौधे के सभी ऊपरी भागो पर देखने को मिलते है । तनों पत्तियों एवं बालियों पर बहुत सारे अण्डाकार स्लेटी धब्बे दिखाई देते है जो बाद में भूरे हो जाते है। इस रोग में आपस में धब्बे मिलकर बड़े धब्बे बना लेते है। रोग का अधिक प्रकोप होने पर पौधे उकठकर मर जाते है। पौधे के विकास के साथ में बालियों का विकास भी रूक जाता है और बालियों में दाने नहीं बनते है। फसल की किसी भी अवस्था में यह रोग हो सकता है। रोग से प्रभावित पौधों में दाने की गुणवत्ता कम हो जाती है जिससे फसल का रेट भी अच्छा नहीं लगता है।

भूरा धब्बा रोग के नियंत्रण के उपाय

इस रोग की जड़ को खतम करने के लिए केवल प्रतिरोधक किस्मों का उपयोग करें।

- खेत में पूर्स्च्छ खेती करें।
- फसल चक्र अपनाए।
- रोपण की तिथि में बदलाव करें।
- उचित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग करें।
- उपयुक्त जल प्रबंधन करें।
- पोटाश की कमी की पूर्ति के लिए पोटाश युक्त उर्वरकों का उपयोग करें।
- भूरा धब्बा रोग के नियंत्रण के थाईरम 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज से उपचारित करें या कार्बेंडाजिम 1.5 ग्रा.ध कि.ग्रा. बीज से उपचारित करें।
- मेनेकोजेब 0.25 प्रतिशत की दर से 10 से 15 दिन के अंतराल में लक्षण दिखते ही छिड़काव करें।

2.बेक्टीरियल लीफ ब्लाइट (जेन्थोमोनस केम्पेस्ट्रिस)

बेक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग को हिंदी में जेन्थोमोनस केम्पेस्ट्रिस रोग के नाम से जाना जाता है जो की जेन्थोमोनस केम्पेस्ट्रिस जीवाणु के कारण होता है। इस रोग में पत्तियों पर पानीदार धब्बे बनते है। धब्बों के आसपास चिपचिपी बूंदे जमा होती है। रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियां पीला से नांरगी भूरी हो जाती है। छोटे धब्बे मिलकर पत्तियों की सतह पर बड़े धब्बे बन जाते है। ये रोग फसल को विकराल रूप में प्रभावित करता है।

बेक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग के लक्षण दो भागों में दिखाई देते है। क्रेसिक फेस और ब्लाइट फेस इन दोनों में लक्षण अलग अलग होते है। क्रेसिक भाग पौधे की प्रांरभिक अवस्था में मुरझाकर सुख जाते है। बाद की अवस्था में ब्लाइट फेस के लक्षण दिखते है जो पत्ती के ऊपर और किनारे में दिखाई पड़ते है, ये धीरे धीरे बढ़कर बड़े एवं लम्बे धब्बे बन जाते है। जैसे – जैसे रोग आगे बढ़ता है, जल्दी ही धब्बे पीले से सफेद हो जाते है।

3.बेक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग के नियंत्रण के उपाय

सबसे पहले बुवाई के लिए रोग मुक्त बीजों का उपयोग करें इससे ही इस रोग का रोकथाम किया जा सकता है। इस रोग को खड़ी फसल में नियंत्रित करने के लिए 5 ग्राम स्ट्रेपटोसाइक्लीन 500 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से रोग की शुरूवात में छिड़काव करें। अच्छा नियंत्रण प्राप्त करने के लिए बाद में 09–12 दिन के अंतराल से छिड़काव फिर से दोहराए।

4. खैरा रोग

धान की फसल में ये रोग भी बहुत नुकसान करता है जिस कारण से फसल की उपज की कम हो जाती है। इस रोग की क्षति की बात करे तो ये रोग मुख्य रूप से जस्ते की कमी से होता है। इस रोग के लक्षण नर्सरी में ही दिखाई देने लग जाते है। इस रोग के सबसे पहले लक्षण नर्सरी में पौधे का पीला पड़ना है। रोग से संक्रमित पौधे पर पत्तों के बीच वाली शिरा के पास पीलापन दिखाई देता है। जिससे की पौधों की बढ़वार रूक जाती है। संक्रमण अधिक होने पर पौधे सुख जाते है।

खैरा रोग के नियंत्रण के उपाय

- नर्सरी के पौधों को बोने से पहले 1 से 2 मिनट तक जिंक सल्फेट के 0.2 प्रतिशत घोल में भिगाए।
- रोग की रोकथाम के लिए बीज को बोने से पहले रात भर जिंक सल्फेट के 0.4 प्रतिशत घोल में भिगाए। या जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. और चूना 2.5 कि.ग्रा. का छिड़काव करें।
- जिंक सल्फेट 5 कि.ग्रा. और चूना 2.5 कि.ग्रा. का पहला छिड़काव नर्सरी में बोने के 10 दिन बाद करें।दूसरा छिड़काव बोनी के 20 दिन बाद करे और
- तीसरा छिड़काव रोपणी के 15 से 30 दिन बाद करें।

5. फाल्स स्मट या आभासी कंडवा रोग

ये रोग यूसलीगनीओइड विरेन्स जीवाणु से होता है। धान की फसल का ये सबसे घातक रोग माना जाता है। रोग फूल आने के बाद में दिखता है। इस रोग में बालियों में दाने हरे काले हो जाते है। संक्रमित दाने छिद्र युक्त चुर्ण से ढके रहते है। हवा से उड़कर यह स्वस्थ फूलों को भी संक्रमित कर देते है। अधिक संक्रमण होने पर सारे दाने खराब हो जाते है।

फाल्स स्मट या आभासी कंडवा रोग के नियंत्रण के उपाय

- इस रोग को पूरी तरह से नियंत्रित करने के लिए दो से तीन साल के लिए फसल चक्र अपनाए।
- गहरी जुताई से भूमि में गिरे स्केलोरेशिया नष्ट हो जाते है।
- संक्रमित दाने एवं पौधों को नष्ट करें, संक्रमित पौधों से बीज न इकटठा करें।
- प्रोपेकोनोजोल (टिल्ट) 1 मि.ली. प्रति लीटर या क्लोरोथोलोनिल 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से फूल निकलने समय छिड़काव करें।
- दूसरा छिड़काव फूल पूरी तरह से आने के बाद करें।
- पोटाश उर्वरकों को डाले

शकरकंदी की खेती किसानों के लिए मीठी कमाई, जानिए इसकी जानकारी

नमस्कार किसान भाइयों आज हम बात करेंगे शकरकंदी की खेती के बारे में। शकरकंदी सिर्फ एक सब्जी नहीं है, बल्कि यह किसानों के लिए एक मीठी कमाई का जरिया भी है। इसकी खेती करना आसान है और इससे अच्छा मुनाफा भी होता है। शकरकंदी कम पानी में भी अच्छी तरह से उग जाती है, साथ ही इसकी खेती में ज्यादा खर्च नहीं आता। बाजार में शकरकंदी की अच्छी मांग रहती है और इससे अच्छा मुनाफा होता है। शक. रकंदी पोषक तत्वों से भरपूर भी होती है, इसमें विटामिन ए, सी और बी कॉम्प्लेक्स होता है। शकरकंदी को सब्जी, मिठाई और स्नैक्स के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यहाँ आप इसकी खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी के बारे में जानेंगे।

शकरकंदी की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

- शकरकंदी की खेती बहुत तरह की मिट्टी में की जा सकती है, जैसे दोमट मिट्टी, लेकिन यह अधिक उपजाऊ और अच्छे निकास वाली मिट्टी में बेहतर पैदावार देता है।
- ध्यान रखे की इसकी हल्की रेतली और भारी चिकनी मिट्टी में खेती नहीं करनी चाहिए क्योंकि इसमें गांठों का विकास नहीं होता है। खेती से अछि पैदावर प्राप्त करने के लिए चभ मिट्टी का 5.8 से 6.7 होना चाहिए।

खेत की तैयारी कैसे करें ?

- इसकी खेती करने के लिए खेती की 2–3 बार अच्छे से जुताई करे ताकि खेत की मिट्टी नरम, भुरभुरी और समतल हो जाए।
- इसकी खेती के लिए खेत की तैयारी सबसे मत्वपूर्ण होती है, जुताई के बाद खेत में अच्छे से क्यारिया बना लेनी चाहिए शकरकंद की बुवाई क्यारियों में की जाती है।
- खेत को अच्छी तरह जुताई कर लें। मिट्टी की गहराई कम से कम 30 सेमी होनी चाहिए। 60 सेमी की दूरी पर मेड़ें और खाँचे बनाएँ। शकरकंद को क्यारियों में भी उगाया जा सकता है।

शकरकंदी की किस्में

- भारत में कई तरह की शकरकंदी की किस्में उगाई जाती हैं, जैसे कि सुरखी, पीली, सफेद आदि।
- आप अपनी जलवायु और मिट्टी के अनुसार किसी भी किस्म की शकरकंदी उगा सकते हैं।
- शकरकंदी की उन्नत किस्में निम्नलिखित है – Co 3, Co CIP 1, श्री नंदिनी, श्री वर्धिनी, किरण, श्री भद्रा, श्री रत्ना, गौरी और संकर सबसे अच्छी किस्में है। इनके अलावा SP 4, SP13, SP18 और मुसीरी ठंडेल भी देशी किस्में है।

पौधों की रोपाई कैसे की जाती है?

- शकरकंदी के पौधे पुराने पौधों की कटिंग से तैयार किए जाते है।
- रोपण के लिए बेल की कटिंग दो या तीन गांठों वाली दस से पंद्रह सेमी लंबी होनी चाहिए और तीन महीने या उससे अधिक उम्र की बेलों से चुनी जानी चाहिए।
- 400 ग्राम एजोस्पायरिलम को पर्याप्त मात्रा में पानी में मिलाकर बेल की कलमों को घोल में डालें। रोपाई करते समय प्रत्येक कटिंग के बीच लगभग एक फुट की दूरी रखनी चाहिए।
- 20 सेंटीमीटर की गहराई में कटिंग लगाना चाहिए।
- इस प्रक्रिया में पौधों के विकास के दौरान बार–बार मिट्टी चढ़ाने की आवश्यकता नहीं होती है। एक एकड़ में 250 से 350 किलो बेल की जरूरत होती है।

शकरकंदी की फसल में सिंचाई

- शकरकंदी की फसल को नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है।
- मानसून के मौसम में प्राकृतिक वर्षा पर्याप्त होती है, लेकिन शुष्क मौसम में हर 10–15 दिन पर सिंचाई की आवश्यकता होती है।

- ध्यान रखें कि अत्यधिक जलभराव से बचें, क्योंकि यह फसल की जड़ों को सड़ा सकता है।

शकरकंदी की फसल की कटाई और भंडारण

- शकरकंदी की फसल आमतौर पर 4–5 महीनों में तैयार हो जाती है। जब पौधों की पत्तियाँ पीली होकर मुरझाने लगें, तो यह संकेत है कि कंदों की कटाई का समय आ गया है।
- कंदों को सावधानीपूर्वक मिट्टी से निकाला जाता है ताकि वे क्षतिग्रस्त न हों। कटाई के बाद कंदों को साफ करके धूप में सुखाया जाता है।
- शकरकंदी को ठंडी और सूखी जगह पर भंडारित करना चाहिए। इसे प्लास्टिक की थैलियों या बोरे में रखकर लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।
- विपणन के लिए स्थानीय बाजारों के अलावा, बड़े शहरों और सुपरमार्केट में भी आप इसे बेच सकते हैं। शकरकंदी की बढ़ती मांग को देखते हुए इसके अच्छे दाम मिलने की संभावना रहती है।

यह लेख किसानों के लिए उपयोगी हो सकता है क्योंकि इसमें शकरकंदी की खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। इसमें खेती की प्रक्रिया, देखभाल, और कटाई के बारे में बताया गया है। साथ ही, इसमें शकरकंदी की विभिन्न किस्मों और भंडारण के बारे में भी जानकारी दी गई है। दसूरी फसलों से जुड़ी जानकारी पाने के लिए आप मेरीखेती पर विजिट कर सकते है।

बार्नयार्ड बाजरा की खेती कैसे की जाती है: बुवाई, देखभाल और उच्च उपज के राज

बार्नयार्ड बाजरा एक सूखा सहिष्णु फसल है, जिसे वर्षा आधारित फसल के रूप में उगाया जाता है और आंशिक जलभराव की स्थिति में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। यह समुद्र तल से 2000 मीटर की ऊँचाई तक उगाया जाता है और इसके लिए गर्म और मध्यम आर्द्र जलवायु उपयुक्त होती है। यह फसल कठिन परिस्थितियों में भी अन्य अनाजों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करती है। इसे कुछ अन्य नामों से भी पुकारा जाता है जैसे जापानी बार्नयार्ड बाजरा, ऊडालू, ऊडा, सांवा, सामा और सांवक। इस लेख में आप इसकी खेती से जुडी सम्पूर्ण जानकारी के बारे में जानेंगे।

बार्नयार्ड बाजरा के लिए उपयुक्त जलवायु

बार्नयार्ड बाजरा एक वर्षा–आधारित फसल है क्योंकि यह सूखा सहिष्णु है। आंशिक रूप से जल भराव की परिस्थितियों में इसे उगाया जा सकता है। बार्नयार्ड बाजरा समुद्र तल से 2700 मीटर ऊपर 200 से 400 मि.मी. वार्षिक वर्षा के साथ खेती की जा सकती है। जहाँ औसत अधिकतम 27°ब से अधिक और औसत न्यूनतम 18°ब से कम नहीं होता वहाँ फसल अच्छी होती है।

बार्नयार्ड बाजरा की खेत के लिए मिट्टी की आवश्यकता

बार्नयार्ड बाजरा को आमतौर पर सीमांत उर्वरता वाली मिट्टी में उगाया जाता है। यह फसल रेतीली दोमट से लेकर पर्याप्त मात्रा में कार्बनिक पदार्थ वाली दोमट मिट्टी पर अच्छी उपज देती है। कम उर्वरता वाली मिट्टी और पथरीली मिट्टी इसके लिए उपयुक्त नहीं होती।

खेत की तैयारी

फसल की बुवाई से पहले खेत की तैयारी जरूरी है। स्थानीय हल से दो जुताई या हैरो से पाटा लगाना पर्याप्त होता है। बुवाई मानसून के आगमन पर की जाती है। अगर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, तो बेहतर परिणाम मिलते हैं।

बीज और बुवाई

बार्नयार्ड बाजरा की बुवाई जुलाई के पहले पखवाड़े में मानसून की बारिश के साथ की जा सकती है। बीज को 8–10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 3–4 सेंटीमीटर गहरे खांचे में बिखेरा या ड्रिल किया जाता है।

पंक्तियों में 25 सेंटीमीटर की दूरी पर बुवाई करना बेहतर होता है।

खाद एवं उर्वरक

5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कम्पोस्ट या गोबर की खाद दी जाती है। 40 किलो नाइट्रोजन, 30 किलो P2O5 और 50 किलो K2O प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिलाई जाती है। सिंचाई की सुविधा होने पर, नाइट्रोजन की आधी मात्रा को बुवाई के 25–30 दिन बाद टॉप ड्रेसिंग करनी चाहिए।

जल प्रबंधन

आमतौर पर बार्नयार्ड बाजरा को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन अगर लंबी अवधि के लिए शुष्क दौर रहता है, तो एक सिंचाई पुष्पगुच्छ निकलने की अवस्था में दी जानी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

बुवाई के 25–30 दिनों तक खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। दो निराई पर्याप्त होती है, और पंक्तियों में बोई गई फसल की निराई–गुड़ाई हैंड हो या व्हील हो से की जा सकती है।

बार्नयार्ड बाजरा की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और नियंत्रण

- **कोमल फफूंदी:** पत्तियों पर हल्के पीले रंग की पट्टियां दिखाई देती हैं जो समय के साथ सफेद हो जाती हैं। संक्रमित पौधों को हटाकर नष्ट करें और स्वस्थ पौधों के बीजों का प्रयोग करें।
- **स्मट:** प्रभावित पुष्पगुच्छ दानों के स्थान पर काले पिंड से भरे होते हैं। बीज को एग्रोसन जी.एन. या सेरेसन 2.5 ग्राम की दर से प्रति किग्रा बीज उपचा. रित करके नियंत्रित किया जा सकता है।
- **जंग:** पत्तियों पर रेखाओं में काले धब्बे दिखाई देते हैं। डाइथेन एम–45 का 2 किग्रा प्रति हेक्टेयर 1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

कीट और उनका नियंत्रण

तना छेदक कीटरू इसे 15 किलोग्राम थीमेट दाना प्रति हेक्टेयर की दर से नियंत्रित किया जा सकता है।

कटाई एवं मड़ाई

फसल के पकने पर इसे दरांती से जमीनी स्तर से काटा जाता है और थ्रेशिंग से पहले एक सप्ताह के लिए खेत में ढेर लगा दिया जाता है।

उपज

औसत उपज 400–600 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है और चारे या पुआल की लगभग 1200 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है। उन्नत प्रथाओं से प्रति हेक्टेयर 10–12 क्विंटल अनाज की फसल प्राप्त की जा सकती है।

ईसबगोल की खेती कैसे की जाती है: उन्नत किस्में, बुवाई का समय और उच्च उत्पादन के टिप्स

ईसबगोल (Plantago ovata Forsk) एक बहुत महत्वपूर्ण औषधीय फसल है। यह औषधीय फसलों के निर्यात में पहले स्थान पर है। वर्तमान में हमारे देश से 120 करोड़ रुपये का ईसबगोल निर्यात हो रहा है। अमेरिका विश्व में ईसबगोल का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। ईरान, ईराक, अरब अमीरात, भारत और फिलीपीन्स इसका सबसे बड़ा उत्पादक हैं। ईसबगोल उत्पादन और क्षेत्रफल में भारत पहला स्थान रखता है। भारत में इसका उत्पादन मुख्य रूप से गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में लगभग 50 हजार हेक्टर में होता है। मुख्य रूप से नीमच, रतलाम, मंदसौर, उज्जैन और शाजापुर जिले हैं।

ईसबगोल की खेती के लिए जलवायु और भूमि

ईसबगोल की खेती ठंडी और शुष्क जलवायु में की जाती है। फसल पकते समय ओस और बारिश बहुत घातक होती हैं। फसल कभी–कभी पूरी तरह से नष्ट हो जाती हैं। इसे अधिक आद्रता और नमीयुक्त जलवायु में नहीं लगाना चाहिए। 20–25 डिग्री सेल्सियस तापक्रम इसके अंकुरण के लिए और 30–35 डिग्री सेल्सियस तापक्रम फसल की परिपक्वता के लिए उपयुक्त हैं। इसके लिए बलुई दोमट या अच्छे जल निकास वाली दोमट भूमि उपयुक्त हैं, भूमि का pH 7–8 होना चाहिए।

फसल की बुवाई के लिए भूमि की तैयारी

मिट्टी भुरभुरी और समतल करने के लिए पाटा चलाकर दो बार आडी खडी जुताई और एक बार सुहागा लगाना चाहिए। क्यारियों को खेत के ढलान और सिंचाई की सुविधानुसार लंबा रखें। क्यारियों की चौडाई 3 मीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए और उनकी लम्बाई 8 से 12 मीटर नहीं होनी चाहिए। खेत में जल निकास अच्छी तरह से होना चाहिए। क्योंकि खेत में पानी की कमी ईसबगोल के पौधे के लिए घातक है।

ईसबगोल की मुख्य किस्में

फसल के अच्छे उत्पादन में उन्नत किस्म का अहम् योगदान होता है। अच्छी किस्म की बुवाई करके ही अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।इसलिए फसल की बुवाई से पहले अच्छी किस्मों का चुनाव करना बहुत महत्वपूर्ण होता है, ईसबगोल की उन्नत किस्में निम्नलिखित है–

1. आरआई 89

यह एक उन्नत किस्म है जो शुष्क और अर्द्ध–शुष्क क्षेत्रों के लिए अनुकूल है। यह किस्म 110–115 दिनों में पक जाती है और 12–16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। यह बीमारियों और कीटों के प्रति भी कम संवेदनशील होती है।

2. आरआई 1

यह किस्म 110–120 दिनों में पक जाती है और औसतन 12–16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। इसकी भूसी उच्च गुणवत्ता वाली होती है और यह तुलासिता रोग के प्रति मध्यम प्रतिरोधी होती है।

3. आरआई 2

यह किस्म 130–135 दिनों में पक जाती है और 10–12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। यह किस्म तुलासिता रोग के प्रति अधिक प्रतिरोधी होती है।

4. गुजरात ईसबगोल 2

यह किस्म 1983 में अखिल भारतीय समन्वित औषधीय एवं सुगन्धित पौध परियोजना, आणंद, गुजरात से विकसित की गई हैं। इसका उत्पादन 9–10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर लिया जा सकता हैं।

5. हरियाणा ईसबगोल 5

यह किस्म अखिल भारतीय समन्वित औषधीय एवं सुगन्धित पौध परियोजना, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा 1989 में निकाली गई हैं। इसका उत्पादन 10–12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर लिया जा सकता हैं।

बुवाई का समय और बीज की मात्रा?

ईसबगोल की अगेती बोआई फसल की वानस्पतिक वृद्धि को बढ़ाती है, इससे फसल आडी पड जाती है और मदुरोमिल आसिता का प्रकोप बढ़ जाता है। यही पर देरी से बुवाई करने पर प्रकोप का वानस्पतिक विकास कम होता है और मानसून पूर्व की वर्षा से बीज झड़ने का अंदेशा बना रहता है। यही कारण है कि किसान भाई ईसबगोल की बोआई अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर के दूसरे सप्ताह तक करने के लिए एक उपयुक्त समय है। दिसंबर तक बोआई करने पर उपज बहुत कम होती है। बुवाई के लिए 4 किग्राध्हेक्टेयर रोग रहित बड़े आकार के बीज का उपयोग करने पर फसल का अच्छा उत्पादन मिल सकता है। बीज दर अधिक होने पर मदुरोमिल आसिता कवक का प्रकोप बढ़ता है, जो उत्पादन को प्रभावित करता है।

बुवाई की विधि

ईसबगोल की छिटकाव पद्धति किसानों में आम है। परंतु इस प्रक्रिया से अंतःसस्य किग्राएं करना मुश्किल होता है। नतीजतन, उत्पादन प्रभावित होता है। किसान भाई ईसबगोल को कतारों में बोना चाहिए, कतार से कतार की 30 सेमी और पौधे से 5 से.मी. की दूरी रखनी चाहिए। वांछित बीज दर का उपयोग करने के लिए, बुवाई करते समय बीज में महीन बालू रेत या छनी हुई गोबर की खाद मिलाकर बुवाई करें। बीज की गहराई 2–3 सेमी होनी चाहिए। यह बीज बहुत गहरा नहीं होना चाहिए। छिटकाव पद्धति से बोने पर मिट्टी को बहुत गहरा नहीं करना चाहिए।

रामतिल की खेती कैसे की जाती है: जलवायु, मिट्टी, उन्नत किस्में और बुवाई के टिप्स

रामतिल, जिसे नाइजर बीज (Niger Seed) भी कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण तेलीय फसल है। यह फसल सूखे क्षेत्रों में भी अच्छी तरह उगाई जा सकती है और इसके बीजों से तेल निकाला जाता है, जो खाद्य तेल के रूप में उपयोग होता है। रामतिल एक लाभकारी तिलहन फसल है जो कम लागत में अच्छी पैदावार दे सकती है। रामतिल का तेल उच्च गुणवत्ता वाला होता है और इसका उपयोग खाना पकाने, साबुन बनाने और पेंट बनाने में किया जाता है। रामतिल की खली भोजन और खाद के रूप में उपयोगी होती है। रामतिल की खेती कम पानी वाली होती है, जो इसे सूखे वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त बनाती है।

रामतिल की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

रामतिल एक उष्णकटिबंधीय फसल है जो गर्म और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह से उगती है। इसकी खेती के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल होता है। 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान फूलों को नुकसान पहुंचा सकता है। इस फसल के लिए 500–700 मि.मी. वार्षिक वर्षा उपयुक्त मानी जाती है।

मिट्टी की आवश्यकता

रामतिल विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, लेकिन यह रेतीली दोमट, बलुआही मिट्टी में सबसे अच्छा प्रदर्शन करता है। मिट्टी अच्छी तरह से सूखा और जल निकास वाली होनी चाहिए। भारी मिट्टी, जलभराव वाली मिट्टी और अम्लीय मिट्टी रामतिल की खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती है। मिट्टी का पीएच मान 5.5 से 7.5 के बीच होना चाहिए।

भूमि की तैयारी

रामतिल की खेती के लिए भूमि को अच्छी तरह तैयार करना आवश्यक है। इसके लिए खेत को अच्छी तरह जुताई करनी चाहिए और मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिए। खेत में गोबर की खाद या कम्पोस्ट डालकर मिट्टी की उर्वरकता बढ़ानी चाहिए। 1–2 बार जुताई के बाद पाटा चलाकर मिट्टी को समतल बना लें।

बुवाई के लिए बीज दर

रामतिल की बुवाई के लिए 4–5 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है। उन्नत किस्मों जैसे कि RK–10, RK–202, JNS–9, RCR–317, RCR–18 , Guj, छपहमत–1, Guj, Niger–2, Paiyur–1 बीरसा नाईज. र–1 और RKN–502 का उपयोग करना बेहतर होता है।

बुवाई की विधि

- **बुवाई का समय:** जून–जुलाई महीने में मानसून की पहली बारिश के बाद।
- **बुवाई की विधि:** बीजों को हाथ से या बुवाई मशीन से बोया जा सकता है।
- **बुवाई की गहराई:** 2–3 सेंटीमीटर।
- **पंक्तियों की दूरी:** 30–40 सेंटीमीटर।
- **बीजों की दूरी:** 2–3 सेंटीमीटर।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए निराई–गुड़ाई आवश्यक है। रासायनिक खरपतवार नाशकों का भी उपयोग किया जा सकता है, लेकिन सावधानी के साथ।

सिंचाई प्रबंधन

रामतिल को शुरुआती और फूल आने की अवस्था में सिंचाई की आवश्यकता होती है। जलभराव से बचना चाहिए, क्योंकि इससे जड़ सड़न हो सकती है। सिंचाई का समय और मात्रा मिट्टी की प्रकार और मौसम पर निर्भर करता है।

कटाई

- रामतिल की फसल 90–100 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है।
- जब पत्तियां पीली हो जाएं और फलियां सूखने लगें तो फसल कटाई के लिए तैयार होती है।
- कटाई हाथ से या मशीन से की जा सकती है।
- कटने के बाद, फसल को 2–3 दिनों के लिए धूप में सुखाना चाहिए।
- सूखने के बाद, फलियों को मसलकर बीज अलग कर लें।

धान की खेती के लिए अपनाएं डैपोग विधि: कम लागत में अधिक उपज प्राप्त करें

धान की खेती करने वाले अधिकांश किसान बारिश पर निर्भर हैं। इसलिए बारिश के मौसम में खेती की जाती है। लेकिन बारिश के पैटर्न में बदलाव अक्सर बारिश में कमी का कारण बनता है।जो धान की खेती पर भी प्रभाव डालता है। अब किसान डैपोग विधि को अपनाकर आसानी से धान की खेती कर सकते हैं। इस प्रक्रिया से चार दिनों में धान का बिचड़ा निकलता है। आइए जानते हैं कि ये विशिष्ट प्रक्रिया क्या है। धान की नर्सरी तैयार करने की एक प्रकार की प्रक्रिया दपोग विधि है। फिलीप. ींस ने इस प्रणाली की खोज की। धान की नर्सरी आसानी से कम बीज, क्षेत्र, सिंचाई और मेहनत में बनाई जा सकती है। इस विधि में लागत कम होने के साथ–साथ यह नर्सरी रोपाई के लिए 14 दिनों में तैयार हो जाती है। इस प्रक्रिया में तैयार पौधों को खेतों में रोपना भी बहुत आसान है।

फिलीपींस से हुई थी डैपोग विधि की खोज

क्कंचवह विधि एक आसान नर्सरी विधि है। इस प्रक्रिया से एक हेक्टेयर खेत में रोपाई और नर्सरी करने के लिए 1.50 किलोग्राम डीएपी खाद का मिश्रण, 20: सड़ी हुई गोबर की खाद, 10: धान की भूसी और 70: खेत की मिट्टी बनाएँ। अब खेत के एक कोने पर 10दृ20 मीटर लम्बा, 1 मीटर चौड़ा और थोड़ा ऊंचा चबूतरा बनाना चाहिए। फिर उसी आकार की एक प्लास्टिक शीट उस पर बिछा देनी चाहिए। शीट के चारों ओर चार से.मी. ऊंची मेड़ बनानी चाहिए। अब खाद और मिट्टी को अच्छी तरह मिलाकर इस शीट पर एक से.मी. मोटी परत बनाना चाहिए।

ऐसे करें बीजों की बुवाई

बाद में, किसान को पहले से चुने गए 9 से 12 किलोग्राम स्वस्थ बीजों को 5 ग्राम स्ट्रेप्टोमाइसिन के घोल में मिलाकर सायनोबैक्टीरिया जैसे जैव उर्वरक से उपचारित करके पूरी शीट पर समान रूप से छिड़कना चाहिए। ताकि बीज अच्छी तरह ढक जाएं, छिड़के गए बीजों पर एक से.मी. मोटी मिट्टी की परत डालनी चाहिए। इसके बाद, इस नर्सरी प्लेटफॉर्म के एक किनारे से कम बहाव वाली पानी की धारा छोड़ दी जानी चाहिए। ऐसा करने से बीज और बोई गई मिट्टी बह नहीं सकती। अब इस प्लेटफॉर्म को पानी से 1 से.मी. ऊंचाई तक भरें। सात दिनों तक इसे इसी तरह रहने दें, फिर पानी निकाल दें। 2 से 3 दिनों के बाद अगर नर्सरी सूखने लगे तो हल्का पानी देकर इसकी नमी बनाए रखनी चाहिए। 14 दिनों के बाद पौधे नर्सरी में लगाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

इन बातों का रखें ध्यान

नर्सरी में पौधा रोपने के नौ दिन बाद, अगर पौधा छोटा दिखे या पौधे की पत्तियां पीली पड़ने लगे तो 0.5: यूरिया का घोल बनाकर छिड़काव करें। ऐसा करने से पौधा फिर से हरा हो जाएगा। अगर नर्सरी में पानी भरा हो तो पौधे को उखाड़ने से दो दिन पहले पानी निकाल दें। इस प्रक्रिया में पौधे को छोटे–छोटे चौकोर टुकड़ों में काटकर ले जाना आसान होता है, जिससे खेतों तक उसका परिवहन आसान होता है और कम श्रम की आवश्यकता होती है। बीज के लिए लाए गए पूरे धान को 10: नमक के घोल में डाल देंय खराब और हल्के बीज इस घोल में तैरने लगेंगे।

SONALIKA
LEADING AGRI EVOLUTION

आधुनिक टेक्नोलॉजी बेमिसाल ताक़त

SONALIKA TIGER DI 65 4WD

सबसे बड़ा
CRDS इंजन
4712 CC

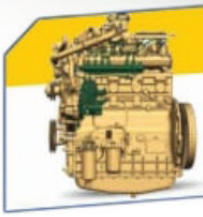

इंजन

65 HP पॉवर
55 HP ईंधन माइलेज

ट्रेम स्टेज-IV

पुदीना की खेती कैसे की जाती है: उच्च उपज और कम लागत के लिए पूरी गाइड

पुदीना लेबियाटे (लैमियासी) परिवार में मेंथा जीनस से संबंधित है, जिसमें तुलसी, सेज, रोजमेरी, मार्जो. रम, लैवेंडर, पेनिरॉयल और थाइम जैसे अन्य सामान्य रूप से उगाए जाने वाले आवश्यक तेल देने वाले पौधे शामिल हैं। जीनस मेंथा के भीतर कई व्यावसा. यिक रूप से उगाई जाने वाली प्रजातियां हैं, जो उनकी प्रमुख रासायनिक सामग्री, सुगंध और अंतिम उपयोग में भिन्न हैं। पुदीना से बनने वाले तेल और व्युत्पन्न सुगंध यौगिकों का दुनिया भर में कारोबार होता है।

पुदीना कितने प्रकार का होता है?

पुदीना चार प्रकार का होता है, जापानी पुदीना/डमद. जीवस डपदज (M-arvensis),पेपरमिंट (M-piperit), स्पेअरमिंट (M- spicata), और बरगामोट मिंट (M- citrata) आदि। सभी जड़ी–बूटी वाले पौधे हैं, जो आसानी से रनर (बरसात के मौसम) और स्टोलन (सर्दियों) में उगाए जाते है, जो नोड्स पर नई जड़ें और अंकुर विकसित करते हैं और पौधे बनाते हैं। पर्णसमूह सहित संपूर्ण हवाई अंकुर मेन्थॉल, कार्वोन, लिनालूल और लिनैनिल एसीटेट से भरपूर आवश्यक तेल का एक स्रोत है, जिसका उपयोग फार्मास्युटिकल तैयारियों और स्वाद उद्योग में किया जाता है।

पुदीने का पौधा कैसा होता है?

जापानी पुदीना एक बारहमासी आरोही जड़ी बूटी है जो लगभग 60–80 से.मी. तक बढ़ती है। ऊंचाई में और अनुकूल परिस्थितियों में 100 से.मी. तक की ऊंचाई प्राप्त कर सकते हैं। इसका प्रचार मुख्यतः इसके स्टोलन द्वारा होता है। पत्तियाँ लांसोलेट–आयताकार, तेज दाँतेदार होती हैंय डंठल लगभग 5 मि.मी. छोटा होता है। लंबाई में पत्ती की परत 5 से 15 से.मी. तक भिन्न होती है। पत्ती की सतह मुख्य रूप से निचली तरफ ग्रंथि ट्राइकोम के घने बालों से ढकी होती है।

फूल एक्सिलरी और टर्मिनल वर्टिसिलस्टर में लगते हैं, जो संख्या में प्रचुर, बैंगनी रंग के होते हैं। फूल छोटे होते हैं, कोरोला 4–5 मि.मी., कैलेक्स 2–3 मि.मी., संकीर्ण रूप से डेल्टॉइड और नुकीले होते हैं। यह बीज पैदा नहीं करता है और इसका प्रसार केवल वानस्पतिक माध्यम से होता है।

पुदीना की खेती के लिए जलवायु और मौसम

पुदीना की खेती उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय दोनों क्षेत्रों में की जा सकती है। विकास अवधि के प्रमुख भाग के दौरान औसत तापमान 20–40वब के बीच होना चाहिए, पुदीने की खेती को वर्षा की आवश्यकता 100–110 से.मी. के बीच होती है। रोपण के समय हल्की बारिश और कटाई के समय पर्याप्त धूप इसकी खेती के लिए आदर्श है।

पुदीना की खेती की खेती के लिए मिट्टी की आवश्यकता

वैसे तो पुदीना की खेती हर प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, कार्बनिक पदार्थों से भरपूर अच्छी जल निकास वाली दोमट या बलुई दोमट मिट्टी, जिसका पीएच 6 से 8.2 के बीच हो, इसकी खेती के लिए आदर्श होती है। इसकी खेती लाल और काली दोनों प्रकार की मिट्टी में भी की जा सकती है। अम्लीय मिट्टी में पीएच 5.5 से कम होने पर चूना लगाने की सलाह दी जाती है, इससे मिट्टी के अम्लीय गुण को कम किया जा सकता है।

पुदीना की उन्नत किस्में

1. MAS-1

पुदीना की इस किस्म की ऊंचाई 30–45 से.मी. की होती है। ये पुदीना की ऊँचाई और जल्दी पकने वाली किस्म है। इस किस्म की कम ऊंचाई के कारण कीड़ों का खतरा कम होता है। इसमें मेन्थॉल 70–80% तक प्राप्त होता है। इसकी उपज लगभग 200 क्विंटल/हेक्टेयर होती है और जड़ी–बूटी एवं तेल 125–150 कि.ग्रा. हेक्टेयर प्राप्त होता है।

2. Hybrid-77

ये पुदीना की जल्दी पकने वाली किस्म है, यह 50–60 से.मी. ऊंचाई तक बढ़ती है। इसमें पत्ती धब्बा एवं जंग रोग बीमारियों की संभावना कम होती है। इस किस्म में मेन्थॉल सामग्री–80–85% तक होती है। इसकी उपज लगभग 250 क्विंटलध्हेक्टेयर होती है साथ ही जड़ी–बूटी एवं तेल 120–150 कि.ग्रा. हेक्टेयर होता है। यह किस्म विशेष रूप से तराई क्षेत्र की तुलना में रेतीली दोमट मिट्टी और शुष्क जलवायु के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित है।

3. शिवालिक

इसकी जड़ी–बूटी से तेल की प्राप्ति 0.4 –0.5% होती है। इस किस्म में मेन्थॉल सामग्रीरू 65–70% होती है। यह किस्म पेड़न के माध्यम से दूसरी कटाई प्राप्त करने के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। यह विशेष रूप से यूपी के तराई क्षेत्र और उत्तराँचल में उगाई जाती है। जड़ी–बूटी की उपज 300 क्विंटल / हेक्टेयर है जबकि आवश्यक तेल की उपज लगभग 180 किलोग्राम / हेक्टेयर होती है।

4. कुशल

पुदीने की ये किस्म टिश्यू कल्चर से विकसित की गयी है। पोदीना की ये किस्म 90 से 100 दिनों के भीतर परिपक्व हो जाती है। पोदीने की ये फसल कीटों और बीमारियों (विशेषकर जंग और पत्ती झुलसा) से मुक्त रहती है। यह किस्म उत्तर प्रदेश और पंजाब की अर्ध–शुष्क–उप–उष्णकटिबंधीय स्थिति में गेहूं के बाद रोपाई के लिए सबसे उपयुक्त है। यह कुछ दिनों तक जलभराव का सामना कर सकती है। इससे उपज 300–330 क्विं./हे. और 175–200 कि.ग्रा./हेक्टेयर तक तेल उपज होती है। इनके अलावा EC–41911, गोमती, हिमालय, कोसी, और सक्षम आदि किस्में भी पुदीने की अच्छी उपज देने वाली किस्में है।

पुदीने को कैसे उगाया जाता है?

पुदीने को स्टोलन और रनर के माध्यम से वानस्पतिक रूप से प्रचारित किया जा सकता है। कुल मिलाकर, फसल के अंतर्गत अधिकांश क्षेत्र में 8 से 10 से.मी. जीवित रसदार पौधे लगाकर प्रचारित किया जाता है। शुरुआती वसंत ऋतु के दौरान लंबे स्टोलन (भूमिगत तने) से इसको उगाया जाता है। प्रयुक्त बीज दर 400–450 कि.ग्रा. तक रखी जाती है। प्रति हेक्टेयर स्टोलन यानि की बेल के बीच में अंतर 40 से 60 से.मी. तक होती है, जो मिट्टी की उर्वरता और उपयोग किए जाने वाले अंतर–सांस्कृतिक उपकरणों के प्रकार पर निर्भर करता है। उत्तरी भारत में जापानी पुदीना की रोपाई फरवरी के प्रथम सप्ताह से मार्च के दूसरे सप्ताह तक उपयुक्त रहती है।

पोदीना की फसल में सिंचाई प्रबंधन

गर्मी के मौसम में दस सिंचाइयां 10–12 दिनों के अंतराल पर दी जाती हैं, जबकि अक्टूबर के अंत में काटी गई शरद ऋतु की फसल के लिए चार से छह सिंचाइयां दी जाती हैं। पुदीने की फसल भरपूर वृद्धि करने के लिए उचित मात्रा में उर्वरक और पानी लगाना चाहिए। अच्छी फसल उपज के लिए कम से कम 100 मि.मी. पानी की आवश्यकता होती है। बरसात के मौसम में जल जमाव से बचने के लिए पर्याप्त जल निकासी प्रदान की जानी चाहिए। भारी मिट्टी और जल जमाव की संभावना वाली मिट्टी में पुदीने की खेती करना बेहतर है। 5 टन प्रति हेक्टेयर की दर से लीफ मल्च का उपयोग सिंचाई की आवृत्ति को 25 प्रतिशत तक कम कर सकता है।

फसल में पोषक तत्व प्रबंधन

पोदीना की फसल में 120 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 40 किलोग्राम पोटेशियम प्रति हेक्टेयर रासायनिक उर्वरकों की अनुशंसित खुराक की आवश्यकता होती है। रोपण के समय फास्फोरस और पोटेशियम की पूरी मात्रा के साथ नाइट्रोजन का पांचवां हिस्सा मिट्टी में मिलाया जाता है, उपलब्ध विभाजित खुरा. कों में नाइट्रोजन का चार–पांचवां हिस्सा दो बार टॉप–ड्रेसिंग (छिड़काव) के रूप में दिया जाता है। रोपण के दौरान प्रति हेक्टेयर लगभग 10 टन अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद, 150 किलोग्राम डीपी और 150 किलोग्राम एमओपी डाला जाता है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा, कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट या यूरिया के रूप में, रोपण के 30 और 60 दिनों के बाद दो अलग–अलग खुराकों में और पेड़ की फसल के लिए बीस दिनों के बाद दी जाती है।

फसल की कटाई और उपज

स्टोलन से लगाई गई फसल जनवरी और फरवरी में दो बार, जून और अक्टूबर में काटी जाती है। पहली फसल 100–120 दिनों के बाद काटी जाती है और दूसरी फसल 80–90 दिनों में काटी जाती है। कटाई के दौरान, ताजी जड़ी–बूटी में 0.5 से 0.68% तेल होता है, जो सूखने के बाद छह से दस घंटे तक रहता है। मुरझाई हुई फसल 10 से.मी. तक काट दी जाती है। तेज धूप वाले दिनों में दरांती के माध्यम से जमीन पर रखेंय बादल या बरसात के दिनों में कटाई करने से तेल में मेन्थॉल की मात्रा कम हो जाती है।

mahindra
TRACTORS
TOUGH HARDUM
माइलेज शानदार,
पावर दमदार
Mahindra 275 DI TU XP PLUS
Mahindra
275DI TU
XP PLUS
29.1 kW (39 HP)

सजहन (मोरिंगा) की खेती: पोषक गुण, विधि, और आर्थिक लाभ

सजहन, जिसे मोरिंगा (Moringa oleifera) के नाम से भी जाना जाता है, एक तेजी से बढ़ने वाला और पोषण से भरपूर पेड़ है। इसकी खेती विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में की जा सकती है और यह अपने औषधीय गुणों और पोषक तत्वों के कारण विश्वभर में लोकप्रिय है। सजहन के पत्ते, फलियां, बीज और जड़ें सभी उपयोगी होते हैं और इनका उपयोग विभिन्न खाद्य और औषधीय उत्पादों में किया जाता है। इस लेख में आप इसकी खेती के बारे में जानेंगे।

सजहन के औषधीय और पोषक गुण

सजहन अपने पोषक तत्वों और औषधीय गुणों के कारण अत्यधिक मूल्यवान है। इसमें विटामिन ए, सी, और ई, कैल्शियम, पोटेशियम, प्रोटीन, और एंटीऑक्सिडेंट पाए जाते हैं। इसके पत्तों और बीजों का उपयोग विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं जैसे उच्च रक्तचाप, डायबिटीज, और सूजन के उपचार में किया जाता है।

जलवायु और मिट्टी

सजहन की खेती के लिए आदर्श जलवायु और मिट्टी की विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

तापमान: 25–35 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान इसकी वृद्धि के लिए उपयुक्त है।

वर्षा: सालाना 250–3000 मि.मी. वर्षा इसके लिए पर्याप्त है, लेकिन यह शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है।

मिट्टी: सजहन की खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है। पीएच स्तर 6.5–7.5 के बीच होना चाहिए।

बीज और रोपण

सजहन की अच्छी फसल के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का चयन और उचित रोपण विधि महत्वपूर्ण है। निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए:

- **बीज चयन:** ताजे और स्वस्थ बीजों का चयन करें।
- **रोपण का समय:** मानसून के शुरूआत में जून–जुलाई सबसे उपयुक्त समय है।
- **रोपण की विधि:** सजहन की खेती बीजों और कलमों दोनों से की जा सकती है। बीजों को सीधे खेत में बोया जा सकता है या नर्सरी में उगाकर बाद में स्थानांतरित किया जा सकता है।
- **बीज दर:** प्रति हेक्टेयर 500–1000 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।
- **रोपण की गहराई:** बीजों को 2–3 से.मी. गहराई पर बोना चाहिए।

खेत की तैयारी

सजहन की खेती के लिए खेत की तैयारी निम्नलिखित चरणों में की जाती है:

- **खेत की जुताई:** खेत को अच्छी तरह से जोतना चाहिए ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए।
- **क्यारियां बनाना:** खेत में समतल क्यारियां बनानी चाहिए ताकि जल निकासी ठीक से हो सके।
- **खाद और उर्वरक:** खेत में गोबर की खाद या कम्पोस्ट का उपयोग करना चाहिए। रासायनिक उर्वरकों में NPK (नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, और पोटैशियम) का उपयोग संतुलित मात्रा में करना चाहिए।

सिंचाई

सजहन की फसल को बहुत अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन शुरुआती दौर में नियमित सिंचाई आवश्यक है। इसकी सिंचाई निम्नलिखित तरीके से की जा सकती है:

- **पहली सिंचाई:** रोपण के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए।
- **दूसरी सिंचाइ:** 10–15 दिन बाद, जब पौधे जमने लगें।
- अन्य सिंचाईरू सूखे मौसम में आवश्यकतानुसार 2–3 सिंचाई करें।

रोग और कीट प्रबंधन

सजहन की फसल पर विभिन्न रोग और कीटों का हमला हो सकता है। इनसे बचाव के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं:

- **फफूंद रोग:** बीज उपचार और फसल की नियमित जांच करें। रोग के लक्षण दिखाई देने पर उपयुक्त फफूंदनाशक का उपयोग करें।
- **कीट:** एफिड, जैसिड, और अन्य कीटों के लिए नीम का तेल या अन्य जैविक कीटनाशकों का उपयोग करें।
- **नियमित निरीक्षण:** फसल की नियमित जांच करें और किसी भी रोग या कीट के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत उपचार करें।

फसल की कटाई और संग्रहण

सजहन की फसल 6–8 महीनों में फलियां देने लगती है। फसल की कटाई और संग्रहण के लिए निम्नलि. खित बिंदुओं का ध्यान रखना चाहिए:

- **कटाई:** जब फलियां हरी और मांसल हो जाएं, तब कटाई करनी चाहिए। पत्तियों को भी आवश्यकता अनुसार काटा जा सकता है।
- **सुखाना:** कटाई के बाद फसल को अच्छी तरह से सुखाना चाहिए ताकि नमी कम हो सके।
- **संग्रहण:** सुखाई गई फसल को सूखे और हवादार स्थान पर संग्रहित करें, बोरियों में भरकर भंडारण करें।

आर्थिक लाभ

सजहन की खेती से किसानों को अच्छे आर्थिक लाभ मिल सकते हैं। इसमें कम निवेश के साथ उच्च उत्पादन और बेहतर बाजार मूल्य मिलता है। सजहन के पत्ते, फलियां, बीज, और जड़ों की बढ़ती मांग और इनके पोषण और औषधीय गुणों के कारण यह फसल किसानों के लिए एक लाभकारी विकल्प बन गई है।

स्ट्रॉबेरी की खेती कैसे की जाती है? भूमि की तैयारी से लेकर तुड़ाई तक सम्पूर्ण जानकारी

स्ट्रॉबेरी (फ्रैगरिया वेस्का) भारत की एक महत्वपूर्ण फल फसल है और इसका व्यावसायिक उत्पादन देश के समशीतोष्ण और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में संभव है। स्ट्रॉबेरी की खेती हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में की जाती है। जम्मू के उपोष्णकटि. बंधीय क्षेत्रों में भी सिंचित स्थिति में फसल उगाने की क्षमता है। इस लेख में आप स्ट्रॉबेरी की खेती से जुड़ी जानकारी के बारे में जानेंगे।

स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए जलवायु और मिट्टि

समशीतोष्ण जलवायु में स्ट्रॉबेरी अच्छी तरह से बढ़ती है। कुछ किस्मों को उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में उगाया जा सकता है। इसकी खेती के लिए दिन के उजाले की अवधि 12 घंटे होनी चाहिए या उससे कम और मध्यम तापमान फूल–कली निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक किस्म की दिन की लंबाई और तापमान की आवश्यकता अलग–अलग होती है। स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए 5.7–6.5 पीएच वाली बलुई दोमट से दोमट मिट्टी आदर्श होती है।

स्ट्रॉबेरी की उन्नत किस्में

भारत में उगाई जाने वाली स्ट्रॉबेरी की महत्वपूर्ण किस्में चांडलर, टिओगा, टॉरे, सेल्वा, बेलरुबी, फर्न और पजारो हैं। अन्य किस्मों में प्रीमियर, रेड कॉस्ट, लोकल ज्योलिकोट, दिलपसंद, बैंगलोर, फ्लोरिडा 90, कैटरेन स्वीट, पूसा अर्ली ड्वार्फ और ब्लेकमोर शामिल हैं।

भूमि की तैयारी

मिट्टी को गर्मी के दौरान मिट्टी पलटने वाले हल से जोता जाता है, जिसके बाद मिट्टी को भुरभुरा बनाने, खरपतवार और ठूंठ हटाने के लिए बार–बार जुताई की जाती है। मिथाइल ब्रोमाइड और क्लोरोपिक्रिन के मिश्रण से मिट्टी का धुंआ जड़ प्रणाली को बढ़ाने, उर्वरक की आवश्यकता को कम करने और खरपतवारों को नियंत्रित करने में मदद करता है।

रोपण और रोपण सामग्री की तैयारी

स्ट्रॉबेरी का व्यावसायिक प्रचार रनर पौधों द्वारा किया जाता है। वायरस मुक्त पौधों के बड़े पैमाने पर प्रसार के लिए, टिशू कल्चर का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। पहाड़ी क्षेत्रों में रनर या क्राउन लगाने का आदर्श समय सितंबर–अक्टूबर है। यदि रोपण बहुत जल्दी किया जाता है, तो पौधों में शक्ति की कमी हो जाती है और परिणामस्वरूप फलों की उपज और गुणवत्ता कम हो जाती है। यदि बहुत देर से लगाया जाए तो धावक विकसित हो जाते हैं और फसलें हल्की होती हैं। रनर्स को नर्सरी से उखाड़कर बंडल बनाकर खेत में रोपा जाता है। इन्हें रोपाई से पहले कोल्ड स्टोरेज में रखा जा सकता है। पत्ती में पानी के तनाव को कम करने के लिए मिट्टी को बार–बार सिंचित करना चाहिए। पत्ते गिरने से पौधे की वृद्धि रुक जाती है, फल लगने में देरी होती है और उपज एवं गुणवत्ता कम हो जाती है।

पौधे से पौधे की दुरी

रोपण की दूरी भूमि की विविधता और प्रकार के अनुसार भिन्न होती है। 30 से.मी. की दूरी. x 60 से.मी. आमतौर पर पालन किया जाता है। मॉडल योजना में, 30 से.मी. का अंतर x 30 सेमी. प्रति एकड़ 22,000 पौधों की आबादी पर विचार किया गया है जो आमतौर पर एक क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान कवर किए गए क्षेत्रों में देखा गया था।

उर्वरक और खाद प्रबंधन

फसल में 25–50 टन गोबर की खाद, 75–100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 40–120 किग्रा फॉस्फोरस (P2O5), 40–80 कि.ग्रा. पोटाश (K2O) प्रति हेक्टेयर की दर से डालें, इसे मिट्टी के प्रकार और लगाए गए किस्म के अनुसार फसल में डाला जा सकता है। उथली जड़ वाला पौधा होने के कारण स्ट्रॉबेरी को प्रत्येक सिंचाई में अधिक लेकिन कम मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। अत्यधिक सिंचाई के परिणामस्वरूप फलों और फूलों की कीमत पर पत्तियों और स्टोलन की वृद्धि होती है और बोट्रीटिस सड़न की घटना भी बढ़ जाती है।

फसल की तुड़ाई और उपज

आम तौर पर स्ट्रॉबेरी की तुड़ाई तब की जाती है जब आधे से तीन चौथाई छिलके का रंग विकसित हो जाता है। मौसम की स्थिति के आधार पर, आमतौर पर हर दूसरे या तीसरे दिन सुबह के समय तुड़ाई की जाती है। स्ट्रॉबेरी की कटाई छोटी ट्रे या टोकरियों में की जाती है। खुले मैदान में अत्यधिक गर्मी से होने वाले नुकसान से बचने के लिए इन्हें छायादार स्थान पर रखना चाहिए। पौधे दूसरे वर्ष में फल देने लगते हैं। औसत उपज 45–100 क्विंटल / हे. स्ट्रॉबेरी के बगीचे से प्राप्त किया जाता है। हालाँकि, औसत उपज 175–300 क्विंटल / हेक्टेयर है (किसी अच्छी तरह से प्रबंधित बगीचे से लिया जा सकता है)। स्ट्रॉबेरी में आसान प्रजनन, शीघ्र परिपक्वता और 5–9% चीनी के साथ उच्च उपज के फायदे हैं। इसके उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिक बाजारों तक उपज के परिवहन के लिए बुनियादी ढांचा सुविधाएं विकसित करने की आवश्यकता है क्योंकि स्ट्रॉबेरी का फल अत्यधिक खराब होने वाला होता है।

महोगनी की खेती करके किसान कमा सकते है लाखों का मुनाफा

भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ के किसानों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। अक्सर किसानों की फसलें बेमौसम बारिश, बाढ़ या सूखे जैसी समस्याओं के कारण बर्बाद हो जाती हैं, जिससे उन्हें आत्महत्या करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। राष्ट्रीय अपराध नियंत्रण ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार, 2021 में 5,563 कृषि श्रमिकों ने आत्महत्या की। ऐसी स्थिति में, हम आपको एक ऐसी फसल के बारे में बताने जा रहे हैं, जिससे कुछ ही वर्षों में करोड़पति बना जा सकता है। महोगनी की खेती करके किसान अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकते हैं। महोगनी का पेड़ बहुत महंगा होता है और इसका हर हिस्सा बाजार में बिक जाता है। इसकी पत्तियाँ भी बेकार नहीं जातीं, वे प्राकृतिक खाद का काम करती हैं। इस पेड़ को उगाने के लिए ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती और खेत में पानी भरने से भी इसे नुकसान नहीं होता। एक एकड़ में 100 महोगनी के पौधे लगाने से कुछ सालों में किसान करोड़पति बन सकता है।

महोगनी की लकड़ी किस काम आती है?

महोगनी की लकड़ी बहुत मजबूत होती है और कई दिनों तक खराब नहीं होती, इसीलिए इसका उपयोग फर्नीचर बनाने में किया जाता है। यह लकड़ी बहुत महंगी होती है और इसका रंग लाल और भूरा होता है, यह पेड़ पानी की कमी में भी 50 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान सह सकता है। इसके औषधीय गुणों के कारण, इसकी छाल, फूल और बीजों से शक्तिवर्धक दवाइयाँ बनाई जाती हैं। इसकी पत्तियों और बीजों से कीटनाशक और मच्छर भगाने वाले उत्पाद बनाए जाते हैं। इसके अलावा, इस पेड़ का इस्तेमाल तेल, इत्र, मंजन और साबुन बनाने में भी होता है।

कब लगाए जा सकते है इसके पेड़?

महोगनी के पेड़ की खेती अधिक हवा वाले स्थानों पर नहीं की जाती क्योंकि इसकी जड़ें मिट्टी में बहुत गहराई तक नहीं जातीं। इस पौध की रोपाई जून से जुलाई के बीच या बारिश के मौसम में की जाती है। खेत में पौधों को लगाने से पहले, चार से छह फीट की दूरी पर चार फीट चौड़ा और एक फीट गहरा गड्ढा खोद लें। पौधों की रोपाई के बाद पर्याप्त मात्रा में पानी डालें ताकि जड़ें आसानी से अपनी जगह बना सकें। गर्मियों में पौधों को पांच से सात दिनों के अंतराल पर और सर्दियों में हर 15 से 20 दिनों में पानी देना चाहिए। हर पांच साल में यह पेड़ बीज देता है और एक पौधे से पाँच किलो तक बीज मिल सकते हैं।

पडलिंग का मास्टर ब्लास्टर
श्रेष्ठ पडलिंग मास्टर
JK TYRE
TOTAL CONTROL
इसके विशेष डिज़ाइन से मिले गीली मिट्टी में भी बेहतरीन ग्रिप
STANDARD
7
YEARS
WARRANTY
मज़बूत टाई-बार
बेहतर लग स्पेसिंग
और ज़्यादा गहरा ट्रेड
नई तकनीक से बना
Mud Shaker
उपलब्ध साइज़ः
13.6 - 28 | 14.9 - 28
#9.50 - 20 | 16.9 - 28
SHRESTH
PUDDLING MASTER
JK TYRE
#Coming soon.
*T&C apply

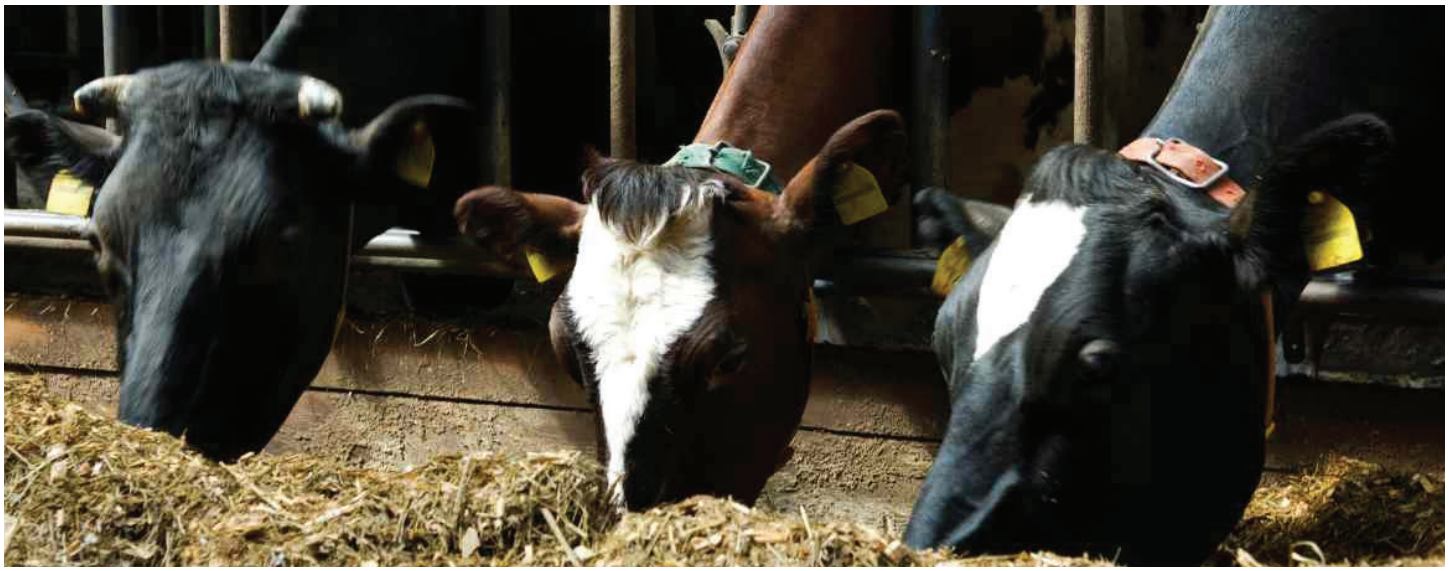

संतुलित मिश्रित पशु आहार: दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण

भारत में अधिकांश पशुपालक अपने पशुओं को पर्याप्त पोषण नहीं देते हैं, जिससे उनका शारीरिक विकास रुकता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कम हो जाती है। स्वस्थ पशुओं और उच्च दूध उत्पादन के लिए संतुलित मिश्रित पशु आहार अत्यंत आवश्यक है। इस लेख में, हम संतुलित मिश्रित पशु आहार के बारे में विस्तृत जानकारी देंगे।

संतुलित पशु आहार क्या होता है?

पशुपालक अपने पशुओं को तिलहनी फसलों की खली (जैसे गुड़, दलिया, सूखा चारा, हरा चारा) देते हैं, जिसमें विटामिन, खनिज लवण, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वसा शामिल होते हैं। ये पोषक तत्व पशुओं को स्वस्थ रहने, अच्छा दूध देने और फुर्ती से काम करने में मदद करते हैं। संतुलित पशु आहार के लिए इन पोषक तत्वों का सही मात्रा में होना आवश्यक है।

संतुलित मिश्रित पशु आहार बनाने के लिए आवश्यक सामान

- **दाना:** मक्का, जौ, गेहूं, बाजरा, चावल
- **खली:** सरसों की खली, मूंगफली की खली, बिनौला की खली, अलसी की खली
- **चोकर:** गेहूं का चोकर, चना की चूरी, दालों की चूरी, राइस ब्रैन
- **खनिज लवण और नमक:** खनिज लवण लगभग 2 किलो, नमक लगभग 1 किलो

संतुलित मिश्रित पशु आहार बनाने का तरीका

पशु चिकित्सकों के अनुसार, देसी गायों को 10 किलो मूंगफली, 10 किलो सरसों या सोयाबीन की खली, 5 किलो चोकर या दलिया, और 1–2 किलो दालों के छिलके चाहिए। खनिज लवण के साथ 20–30 ग्राम विटामिन–। और D–3 भी शामिल करें।

- सबसे पहले तिलहनी फसलों की खली को बारीक कूटकर चूरी बना लें।
- चोकर और दालों के छिलकों को खली के बारीक मिश्रण में मक्का, गेहूं या जौ के दलिया के साथ मिलाएं।
- खनिज लवण और नमक मिलाकर पशुओं का पाचन बेहतर करें।
- इस मिश्रण को अच्छी तरह मिलाकर एक बैग में भरकर रखें।

संतुलित आहार देने से होने वाले फायदे

संतुलित आहार से गाय–भैंस अधिक समय तक दूध दे सकती हैं। यह आहार स्वादिष्ट और आसानी से पचने योग्य होता है। यह खली, बिनौला या चने से सस्ता होता है। इससे पशुओं का स्वास्थ्य सुधरता है और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। साथ ही, यह उन्हें बीमारियों से बचाता है और दूध और घी के उत्पादन में बढ़ोतरी करता है।

सोनालीका ने जून' 24 में 41,465 ट्रैक्टरों की बिक्री करके सेल्स में 16.6% की वृद्धि हासिल की

आपकी जानकारी के लिए बता दे कि सोनाली. का ट्रैक्टर कंपनी ने अपनी जून महीने की रिपोर्ट जारी कर दी है। सेल्स रिपोर्ट के मुताबिक जून'24 के दौरान घरेलु बाजार में कंपनी ने 14,062 ट्रैक्टरों की बिक्री दर्ज की है, इससे कंपनी ने 16.6% की बिक्री में वृद्धि और 1.4 प्रतिशत अंक की बाजार हिस्सेदारी में बढ़ोतरी दर्ज की है, जो भारत में सभी ट्रैक्टर ब्रांड में सबसे अधिक है। सोनालीका ट्रैक्टर्स, भारत से ट्रैक्टर एक्सपोर्ट में सर्वश्रेष्ठ ब्रांड, अपने शक्तिशाली और ईंधन–कुशल ट्रैक्टरों के साथ ष्भारत में गुणवत्ताष प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है और फ1, FY25 में एक नई ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करके उत्साहित है। उसने पहली तिमाही में उद्योग के प्रदर्शन की तुलना में लगभग दो गुना वृद्धि दर्ज की है, कंपनी ने इस साल जून महीने में 41,465 ट्रैक्टर बिक्री और (अनुमानित) सर्वाधिक कुल बाजार हिस्सेदा. री 14.4% दर्ज की है।

घरेलू बाजार में बेचे 14,062 ट्रैक्टर

जून के दौरान, कंपनी ने अपने गुणवत्ता–केंद्रित दृष्टिकोण से घरेलू बाजार में 14,062 ट्रैक्टर बेचे हैं। इसमें बिक्री में 16.6: की वृद्धि और बाजार हिस्सेदारी में 1.4 प्रतिशत की वृद्धि शामिल है, जो सभी ट्रैक्टर ब्रांडों में सबसे अधिक है। जून 23 तक, कंपनी ने घरेलू बाजार में 12,056 ट्रैक्टर बेचे थे। ष्प्राइड ऑफ इंडियाष सोनालीका ने किसानों को अपने हैवी ड्यूटी ट्रैक्टरों में बेहतर ताकतवर इंजन और बेहतरीन मल्टी स्पीड ट्रांसमिशन देकर उच्च कृषि उत्पादन सुनिश्चित किया है, जैसे–जैसे कृषि–तकनीकी समाधान अधिक से अधिक किसानों पर केंद्रित होते जा रहे हैं।

इस प्रदर्शन पर श्री रमन मित्तल ने क्या कहा?

रिकॉर्ड प्रदर्शन पर श्री रमन मित्तल, जॉइंट मैनेजिंग डायरेक्टर, इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड, ने कहा, ष्हमने पहली तिमाही में 41,465 ट्रैक्टरों की सर्वाधिक बिक्री और (अनुमानित) सर्वाधिक बाजार हिस्सेदारी 14.4% दर्ज की, साथ ही उद्योग के प्रदर्शन की तुलना में लगभग 2 गुना वृद्धि दर्ज की है।ष यह जून 24 में घरेलू बाजार में 14,062 ट्रैक्टरों की बिक्री के उत्कृष्ट प्रदर्शन से प्रेरित है, जिसमें रिकॉर्ड 16.6% की बिक्री वृद्धि और 1.4% की बढ़ोतरी की बाजार हिस्सेदारी, जो सभी ट्रैक्टर ब्रांडों में सबसे अधिक है। भारत में मानसून के जल्द आगमन से भारतीय कृषि क्षेत्र में सकारात्मक भावनाएं आई हैं क्योंकि वित्त वर्ष' 25 में खरीफ रकबा 30% से अधिक बढ़ गया है। ला नीना (La Nina) की स्थिति में तेजी आने की संभावना है जिसे मॉनसून वर्षा में चल रही कमी को पूरा करना चाहिए। सोनालीका को भारत में कृषि विकास को बढ़ावा देने के लिए अपने अनुशासित और गुणात्मक दृष्टिकोण के साथ वाले प्रमुख ब्रांड में से एक होने पर गर्व है। हमारी टीमें नई फार्म–टेक मशीनरी पर विचार–मंथन, डिजाइन और विकास करने के लिए प्रभावी ढंग से कार्य करती हैं जो खेती को अधिक स्थिर बनाती है और हम किसानों की प्रगति में मुख्य भूमिका निभाने के लिए उत्सुक हैं।

सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP ट्रैक्टर: उन्नत तकनीक, शानदार डिजाइन और शक्तिशाली प्रदर्शन

सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP सुपर आकर्षक डिजाइन वाला एक अद्भुत और शक्तिशाली ट्रैक्टर है। सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP खेत पर प्रभावी काम के लिए सभी उन्नत तकनीक के साथ आता है। सोनालिका ट्रैक्टर किसान भाइयों द्वारा बहुत पसंद भी किये जाते है। ये कंपनी सदा से ही किसानों के मनपसंद ट्रैक्टर लाती रही है। इसी के चलते कंपनी ने लॉन्च किया है सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP।

सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP ट्रैक्टर की इंजन क्षमता (Capacity of Engine)

- सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP 60 (hp) एचपी श्रेणी में एक अनुकूलित ट्रेक्टर है।
- शक्तिशाली 4 सिलेंडर 60 एचपी इंजन क्षमता के साथ आता है, सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP 2100 रेटेड आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन और उत्पादकता प्रदान करता है।
- ट्रेक्टर के इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 4087 CC है।
- ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इस ट्रैक्टर में वाटर कूल्ड इंजन आपको मिल जाता है।
- Air फिल्टर की बात करे तो इस ट्रैक्टर में Oil ठंजी टाइप और DryType Pre क्लीनर मिल जाता है।
- ट्रैक्टर के पीटीओ पावर 51.6 HP की दी गयी है।

सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP ट्रैक्टर की प्रमुख विशेषताएं

- सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP ट्रैक्टर में 12 फॉरवर्ड. 12 रिवर्स गियरबॉक्स ट्रांसमिशन और कुशल कार्यक्षमता के साथ आता है।
- ब्वदेजंदज डमी टाइप का ट्रांसमिशन आपको इस ट्रैक्टर में मिल जाता है।
- सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP पावर स्टीयरिंग विकल्प के साथ, यह भारत के किसान के बेहतर आराम के लिए एर्गोनोमिक सीट के साथ डिजाइन किया गया है।
- अगर हम सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP के टायरों की बात करे तो ट्रैक्टर में आगे के टायर 190-5 mm & 406-4 mm (7-50 x 16) आते है और पीछे के टायरों का आकार 429 - 2 mm & 711 - 2mm (16-9 x 28) आता है। टायरों का आकर बड़ा होने के कारण सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP बेहतर वाहन नियंत्रण प्रदान करता है।
- सोनालीका क्ष 60 सिकंदर क्स ज्च ट्रैक्टर में पदहसम वत कनंस बसनजबी दोनों प्रकार के बसनजबी दिए गए है।
- ब्रेक की हम बात करे तो सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP ट्रैक्टर में तेल में डूबे हुए ब्रेक आते है।
- सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता की बात करे तो इसमें 2200 किलोग्राम की लिफ्ट क्षमता और सर्वोत्तम परिचालन परिणामों के लिए सटीक हाइड्रोलिक्स भी हैं।
- हल, कल्टीवेटर, रोटावेटर, पोटैटो प्लांटर, ट्रॉली, मल्चर, स्ट्रॉ रीपर, सुपर सीडर जैसे विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए डिजाइन किया गया है।
- अत्याधुनिक सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP एक प्रौद्योगिकी चमत्कार जो भारत की फसल और मिट्टी के लिए सबसे उपयुक्त है। विशिष्ट परिस्थितियाँ, जिससे बेहतर उत्पादकता के साथ अधिक आय अर्जित करने में मदद मिलती है।
- सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP ट्रैक्टर का व्हील बेस 2125 mm का आता है।
- ट्रैक्टर की आगे की गति 1- 58 & 38 -13 किलोमी. टर प्रति घंटे है।
- ट्रैक्टर की ईंधन टंक की क्षमता 65 लीटर है।

सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP की कीमत कितनी है?

ट्रैक्टर की कीमत की हम बात करे तो ये आप को 8.54–9.28 सीी तक की कीमत में मिलता है। अलग–अलग स्थानों पर कीमत में फरक भी देखने को मिलता है। यह उन्नत प्रौद्योगिकी संचालित सोनालीका DI 60 सिकंदर DLX TP ट्रैक्टर किफायती मूल्य सीमा के तहत पूरे भारत में उपलब्ध है। कंपनी इस ट्रैक्टर के साथ 2000 घंटे या 2 साल की वार्रन्टी भी प्रदान करती है।

Massey Ferguson 7052 L: किसानों के लिए कंपनी की नई पेशकश

मैसी फर्ग्यूसन ट्रैक्टर भारत के किसानों की पहली पसंद है कंपनी किसानों की जरुरत के हिसाब से ट्रैक्टरो का निर्माण करती है। इस कंपनी के ट्रैक्टर किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है। मैसी के ट्रैक्टर खेतों में जबरदस्त काम करने के कारण मशहूर है, कंपनी समय समय पर नए ट्रैक्टरो का निर्माण करती रहती है, इसकी कड़ी ने कंपनी ने किसानों के लिए डेंमल थ्मतहनेवद 7052 L ट्रैक्टर लांच किया है। इस लेख में आप इस ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन्स और कीमत के बारे में जानेंगे।

मैसी फर्ग्यूसन 7052 L की इंजन पावर

- इस ट्रैक्टर के इंजन की बात करें तो इस ट्रैक्टर में 48 hp dk Simpson S337-1 T III । इंजन दिया है।
- इसके इंजन में कंपनी ने 4 सिलिंडर प्रदान किए है साथ ही इसकी क्यूबिक कैपेसिटी 2190 बब है।
- ट्रैक्टर में PFR type का Fuel Injection Pump आपको मिलता है।
- इसी के साथ नीचे की तरफ इंजन आयल फिल्टर देखने को मिलता है।
- डीजल से पानी की मात्रा को अलग करने के लिए कंपनी ने इस ट्रैक्टर में वाटर सेपरेटर भी प्रदान किया है।
- वाटर सेपरेटर के पीछे कनंस डीजल स्पिन फिल्टर दिए गए है जो की डीजल की सफाई के लिए बहतरीन कार्य करते है।

मैसी फर्ग्यूसन 7052 स ट्रैक्टर की विशेषताएँ

- इस ट्रैक्टर के गियरबॉक्स में आपको 8 फॉरवर्ड. 8 रिवर्स गियर्स मिलते है और ट्रैक्टर में`लदबीतव डमी ज्तंदेउपेपवद ज्लचम आपको मिल जाता है जिससे की ट्रैक्टर में अच्छा नियंत्रण प्राप्त होता है।
- ट्रैक्टर को नियंत्रण करने के लिए व्पस पउउमतेमक ब्रेक्स इस ट्रैक्टर में दिए गए है, साथ ही पावर स्टीयरिंग के साथ में ये ट्रैक्टर आता है।
- इस ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 41.28 भ्च है इसी के साथ ट्रैक्टर में ग्राउंड स्पीड पीटीओ दी गयी है जो की 540ध्750 आरपीएम स्पीड पर चलता है। मल्टी. स्पीड और लाइव स्पीड पीटीओ का ऑप्शन इस ट्रैक्टर में आपको देखने को मिलता है।
- इसके हाइड्रोलिक्स के लिंक्स की बात करें तो इस ट्रैक्टर में आपको`जंइपसप्रमत चौक चौन वाला दिया गया है। ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1300 किलोग्र. ाम है।
- ट्रैक्टर में ड्राफ्ट, पोजीशन और तमेचवदेम कण्ट्रोल के भी पॉइंट्स दिए गए है।
- ट्रैक्टर में 8 • 18 (20.32 बउ • 45.72 बउ) फ्रंट टायर आपको मिल जाते है इसके अलावा 13.6 • 28 (34.54 बउ • 71.12 बउ) त्मंत टायर भी इस ट्रेक्टर में आपको मिल जाते है।
- इस ट्रैक्टर में 50 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक दिए गया है जिससे लंबे समय तक खेतों पर जुताई की जा सकती है।

मैसी फर्ग्यूसन 7052 स ट्रैक्टर की कीमत क्या है?

अभी मैसी फर्ग्यूसन 7052 स ट्रैक्टर की कीमत को कंपनी ने सार्वजनिक नहीं किया है। अगर आप इस ट्रैक्टर की कीमत के बारे में जानना चाहते है तो डमतपीमजप से सम्पर्क कर सकते है।

Crops

Coromandel Fantac Plus

Flusilazole 12.5% + Carbendazim 25% SE

Vegetables Crops

Horticultural Crops

आयशर 330 ट्रैक्टर: 35 HP पावर, उच्च लिफ्टिंग और शक्तिशाली इंजन की खासियत

आयशर 330 एक 35 HP ट्रैक्टर है। कंपनी ने ये ट्रैक्टर शक्तिशाली इंजन के साथ बनाया है। ये ट्रैक्टर खास कर किसान भाइयों की खेती को आसान बनाने के लिए बनाए गए हैं, जिससे समय की बचत होगी और जोरदार या शक्तिशाली काम करने में समय की बचत होगी। कंपनी ने इस ट्रैक्टर में कई नए फीचर्स जोड़ दिए हैं जो इसे अन्य ट्रैक्टरों से अलग बनाते हैं। किसान भाइयों, अगर आप भारी सामान खींचने या ढ़ोने के लिए ट्रैक्टर की जरूरत है तो यह आपके लिए सही ट्रैक्टर हो सकता है।

ट्रैक्टर की इंजन की क्षमता

- आयशर 330 का 3 सिलेंडर का शक्तिशाली इंजन बड़े किसानों के लिए लागत प्रभावी संचालन प्रदान करता है।
- इसके अलावा, ड्राई क्लीनर एयर फिल्टर के साथ इंजन धूल से मुक्त रहता है, जिससे इसका संचालन आसान और प्रभावी होता है।
- ट्रैक्टर में स्वाभाविक रूप से एस्पिरेटेड वाटर कूल्ड सिस्टम है, जो इंजन को ठंडा रखता है।
- ट्रैक्टर के इंजन की Cubic Capacity 2272 cc है।
- ट्रैक्टर की पीटीओ 28.38 एचपी क्षमता से खेती आसान और सफल होती है। यह किसी भी किसान के बेड़े के लिए एक विश्वासपात्र जोड़ है, क्योंकि इसका उन्नत पीटीओ सिस्टम और आसान हैंडलिंग है।

ट्रांसमिशन और गियर्स

इस ट्रैक्टर के ट्रांसमिशन की बात करें तो इस ट्रैक्टर की ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड गति के लिए और 2 रिवर्स गति के लिए गियरबॉक्स प्रदान किये गए है।अधिक गति विक्लप होने से ट्रैक्टर कम समय में ज्यादा क्षेत्र को कवर करता है जिससे किसान के समय की बचत होती है। उन्नत ट्रांसमिशन सिस्टम ट्रैक्टर को सुचारू और आसान कामकाज प्रदान करने में सक्षम बनाता है।

स्टीयरिंग और ब्रेक

आयशर 330 ट्रैक्टर में स्टीयरिंग पावर स्टीयरिंग दिया गया है। पावर स्टीयरिंग होने से ट्रैक्टर के चालक को ट्रैक्टर को चलने में भी मजा आता है पावर स्टीयरिंग से कम जगह में भी ट्रैक्टर आसानी से घूम जाता है। पावर स्टीयरिंग होने से सड़क पर भी ट्रैक्टर का नियंत्रण आसान हो जाता है। इस से जब आप खेत में काम करते है उस समय ट्रैक्टर सँभालने में आसानी होती है। तेल में डूबे हुए ब्रेक होने से ट्रैक्टर को कठिन परिस्थितियों को भी पार करने में मदद मिलती हैं। उदाहरण के लिए ढलानों, चिकनी जगह और सड़क पर नियंत्रण करने में आसानी मिलती।

हाइड्रोलिक्स लिफ्टिंग कैपेसिटी

ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1450 किलोग्राम है। ट्रैक्टर में अधिक लिफ्टिंग कैपेसिटी क्षमता होने से ट्रैक्टर आसानी से भारी से भारी वजन को भी उठा सकता है।

आयशर 330 ट्रैक्टर कीमत क्या है?

ट्रैक्टर की कीमत 5.10–5.15 लाख रूपए तक है। बड़े किसानों और ढुलाई के कार्यों के लिए ये ट्रैक्टर बहुत उत्तम है। Merikheti के इस लेख में आपने आयशर 330 ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन्स और कीमत के बारे में विस्तार से जाना है।

करतार 4036 ट्रैक्टर: भारतीय किसानों के लिए परफेक्ट पावर और परफॉरमेंस का संयोजन

करतार 4036 ट्रैक्टर भारतीय कृषि उपकरण उद्योग में एक महत्वपूर्ण नाम है। इस ट्रैक्टर को विशेष रूप से भारतीय किसानों की जरूरतों और खेती की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। इसकी मजबूत बनावट, उन्नत तकनीक और प्रभावशाली प्रदर्शन इसे किसानों के बीच एक लोकप्रिय विकल्प बनाते हैं।

करतार 4036 ट्रैक्टर के बारे में विवरण

करतार 4036 ट्रैक्टर का डिजाइन अत्यंत मजबूत और टिकाऊ है। इसमें उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री का उपयोग किया गया है जो इसे विभिन्न प्रकार की खेती और परिवहन कार्यों के लिए उपयुक्त बनाती है। इसके अलावा, इस ट्रैक्टर का एर्गोनॉमिक डिजाइन न केवल इसकी कार्यक्षमता को बढ़ाता है बल्कि उपयोगकर्ता को आरामदायक अनुभव भी प्रदान करता है।

करतार 4036 ट्रैक्टर की इंजन पावर

- करतार 4036 ट्रैक्टर किर्लोस्कर 3आर 810 डीजल इंजन से लैस है।
- इस ट्रैक्टर में 40 एचपी का इंजन है जो की 2200 रेटेड रप पर कार्य करता है।
- इस ट्रैक्टर के इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 2430 बब है।
- ट्रैक्टर में आपको एयर क्लीर टाइप ड्राई टाइप का मिलता है।
- इस ट्रैक्टर में 34-06 HP की पीटीओ पावर मिल जाती है, साथ ही इस ट्रैक्टर में कंपनी 2000 घंटे या 2 साल की वार्रन्टी भी प्रदान करती है।

ट्रांसमिशन टाइप

ट्रैक्टर में पार्शियल कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन आपको मिल जाता है जिससे की ट्रैक्टर का कार्य बहुत आसान हो जाता है। इस ट्रैक्टर के गियरबॉक्स में आपको 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स स्पीड के लिए गियरबॉक्स मिल जाते है, जिससे की ट्रैक्टर में अच्छी स्पीड मिलती है। इनबोर्ड रिडक्शन के साथ ये ट्रैक्टर अच्छा प्रदर्शन करता है। इसके गियर सिस्टम का संचालन बेहद आसान है, जिससे ऑपरेटर को कोई कठिना. ई नहीं होती। इसके अलावा, इसका ट्रांसमिशन सिस्टम सुचारू और निर्बाध गति परिवर्तन की सुविधा प्रदान करता है, जो खेती और परिवहन कार्यों को अधिक प्रभावी बनाता है। ट्रैक्टर में आपको ड्यूल क्लच मिल जाता है जिससे की गियर्स की पोजिसिशन बदलना आसान हो जाता है।

लिफ्टिंग कैपेसिटी

लिफ्टिंग कैपेसिटी की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 1800 किलोग्राम की हैवी लैफ्टिंग कैपेसिटी मिल जाती है जिससे की आप ढुलाई के कार्य भी आसानी से कर सकते है। करतार 4036 ट्रैक्टर में उन्नत हाइड्रोलिक सिस्टम है जो इसे विभिन्न प्रकार के कृषि उपकरणों को उठाने और संचालित करने में सक्षम बनाता है। इसकी लिफ्टिंग क्षमता प्रभावशाली है, जो इसे भारी उपकरणों और भार उठाने में सक्षम बनाती है। यह विशेषता इसे खेती के विभिन्न कार्यों के लिए अत्यधिक उपयोगी बनाती है। करतार 4036 ट्रैक्टर का कुल वजन लगभग 1955 किलोग्राम है, और ग्राउंड क्लीयरेंस 420 मिलीमीटर है, जो इसे असमान इलाके में आसानी से चलने की अनुमति देता है।

ब्रेकिंग सिस्टम

करतार 4036 ट्रैक्टर तेल में डूबे ब्रेक के साथ आता है, जो कठोर परिचालन परिस्थितियों में भी रोकने की क्षमता देता है। यह ब्रेकिंग प्रणाली उच्च भार और बार–बार रुकने और शुरू करने को प्रभावी ढंग से संभाल सकती है, इसलिए यह कृषि में उपयुक्त है।

टायर्स

इस ट्रैक्टर में आपको 6-0 x 16 के फ्रंट और 13-6 X 28 के रियर टायर मिल जाते है, जिससे की ट्रैक्टर हर प्रकार की स्थिति में आसानी से कार्य कर सकता है।

करतार 4036 ट्रैक्टर की कीमत क्या है?

करतार 4036 ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 6.40 लाख रूपए तक है, कीमत में कई स्थानों पर थोड़ा फरक भी देखने को मिल सकता है।

रेशम कीट पालन (सेरीकल्चर) क्या है: कैसे करें रेशम कीट पालन?

रेशम उत्पादन को सेरीकल्चर कहते हैं, जिसमें रेशम के कीड़ों को पालकर उनसे रेशम का उत्पादन किया जाता है। भारत में रेशम की साड़ियां विशेष स्थान रखती हैं और यह बुनकरों की शिल्प कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। रेशम कीट पालन करके किसान अच्छा–खासा मुनाफा कमा सकते हैं। यह एक प्राकृतिक रेशा है और इसे बढ़ावा देने के लिए सरकार की ओर से किसानों को भरपूर सहयोग दिया जा रहा है। रेशम कीट पालन एक लाभकारी व्यवसाय है जिसमें महिलाएं भी शामिल हो सकती हैं। सही मार्गदर्शन और ट्रेनिंग लेकर किसान इस व्यवसाय से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

रेशम उद्योग का इतिहास और महत्व

रेशम उद्योग को बढ़ावा देने के लिए 1949 में रेशम बोर्ड की स्थापना की गई थी। यह एक कुटीर उद्योग है जो ग्रामीण क्षेत्र में कम लागत में तेजी से उत्पादन शुरू करने का मौका देता है। कृषि कार्यों और घरेलू कार्यों के साथ भी इसे किया जा सकता है। रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए अनुसंध. ान और विकास पर जोर दिया गया और नई तकनीकों का विकास किया गया। रेशम उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह लाखों लोगों के लिए रोजगार का स्रोत है, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में। रेशम उत्पादन से किसानों को अतिरिक्त आय का स्रोत मिलता है और यह कृषि आधारित उद्योग के रूप में अपनी जगह बना चुका है।

रेशम कितने प्रकार का होता है?

भारत में दो प्रकार का रेशम उत्पादन किया जाता है:

- **शहतूती रेशम (मलबरी सिल्क):** इसका उत्पादन जम्मू–कश्मीर, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में होता है।
- **गैर शहतूती रेशम (नॉन–मलबरी सिल्क):** इसका उत्पादन झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, उत्तर प्रदेश और उत्तर–पूर्वी राज्यों में होता है।

रेशम किट पालन के लिए करनी होगी शहतूत की खेती

रेशम किट पालन के लिए सबसे पहले शहतूत की खेती करनी होती है –

- शहतूत की खेती के लिए खेत को जोतकर अच्छे से तैयार करें।
- 4 x 4 फीट की दूरी पर पौधों का रोपण करें।
- एक एकड़ में 2700 से 3600 पौधे लगाए जा सकते हैं।
- एक एकड़ से 6000 – 7000 किलोग्राम पत्तियों का उत्पादन होता है।

रेशम किटों का रखरखाव

- कीड़ों के पालन के लिए साफ–सुथरी जगह का चुनाव करें।
- कीटों के रखरखाव के लिए ट्रे, बांस और टैंक का प्रयोग करें।
- कीटांडों को लाकर साफ स्थान पर रखें।
- कीटांडों से प्रस्फुटित कीट बहुत कोमल होते हैं, इसलिए इन्हें कोमल पत्ते ही देने चाहिए।
- 28 दिन बाद कीट 8000 गुना आकार में बढ़ जाते हैं और एक दिन में 30–35 ग्राम तक शहतूत की पत्तियाँ खाते हैं।
- रेशम किट चार बार केचुली उतारते हैं और रेशम निर्माण की प्रक्रिया 72 घंटों तक चलती है।

उत्पादन और मुनाफा

एक किट 35 से 40 किलोग्राम खोया निर्माण करता है। प्रति एकड़ में 225 – 240 किलोग्राम उत्पादन होता है। इसकी बिक्री सरकार द्वारा करवाई जाती है, जिससे किसानों को अच्छा मुनाफा मिल सकता है।

मल्चिंग क्या होती है: इससे किसानों को क्या लाभ होता है?

मल्चिंग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मिट्टी की सतह पर विभिन्न सामग्रियों की एक परत बिछाई जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य मिट्टी में नमी बनाए रखना, खरपतवारों को दबाना, मिट्टी को ठंडा रखना और सर्दियों में पाले से पौधों को सुरक्षित रखना होता है। मल्चिंग के माध्यम से मिट्टी की संरचना और उसकी जल निकासी की क्षमता में सुधार होता है।

मल्चिंग क्या होती है?

मल्चिंग मिट्टी की सतह पर लगाई जाने वाली सामग्री की एक परत है। मल्च, या मूलच, एक प्रक्रिया है जिसका उपयोग खरपतवारों को दबाने, मिट्टी को ठंडा रखने, सर्दियों में पाले की समस्या से पौधों को बचाने के लिए किया जाता है।

मल्चिंग के प्रकार?

मल्चिंग दो प्रकार के होते हैं – ऑर्गेनिक मल्च और अकार्बनिक मल्च

अकार्बनिक मल्च

अकार्बनिक मल्च खरपतवारों को रोकने और मिट्टी में नमी बनाए रखने के लिए भी अच्छे हैं, लेकिन वे मिट्टी को कोई पोषक तत्व नहीं देते। प्लास्टिक सड़ते हुए मिट्टी और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है, हालांकि अकार्बनिक मल्च अपघटित नहीं होता। प्लास्टिक शीट, लैंडस्केप फैब्रिक और पत्थरध्बजरी आदि का प्रयोग अकार्बनिक मल्च के रूप में किया जाता है।

मल्चिंग से मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ जुड़ जाते हैं

मिट्टी में अधिक कार्बनिक पदार्थ होने से पौधों को अधिक तत्व मिलते हैं। एक छोटी सी चुटकी मिट्टी में अरबों जीवित जीव हैं, शायद सूक्ष्म जीवों की दस हजार प्रजा. तियाँ भी हों। ये सूक्ष्मजीव कार्बनिक पदार्थों को काटते हैं, जो पौधों को विकसित करने के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं। इस प्राकृतिक पोषक चक्र की एक अच्छी बात यह है कि पौधों की जरूरत के अनुसार पोषक तत्वों का निरंतर वितरण होता है। जब पौधों का विकास तेजी से होता है, तो कार्बनिक पदार्थों से पोषक तत्वों की तेजी से रिहाई होती है।

मल्चिंग से मिट्टी की संरचना में सुधार

जब मिट्टी की सतह पर कार्बनिक पदार्थ की गीली घास डाली जाती है, तो यह सड़ कर कीचड़ और गोंद पैदा करती है जो मिट्टी की संरचना को बनाने और स्थिर करने में मदद करती है। अतिरिक्त कार्बनिक पदार्थ मिट्टी के प्राणियों के लिए भोजन है। ये मिट्टी में अपना रास्ता खोदते हैं, कार्बनिक पदार्थ को इसमें मिलाते हैं और मिट्टी के भीतर मार्ग बनाते हैं जिसके माध्यम से हवा और पानी घुसपैठ कर सकते हैं। इस तरह, मल्चिंग से ढीलापन दूर करने में मदद मिल सकती है।

मल्चिंग के लाभ

- **मिट्टी में नमी बनाए रखना:** मल्चिंग मिट्टी की सतह से पानी के वाष्पीकरण को कम करती है, जिससे पौधों को अधिक समय तक नमी मिलती रहती है।
- **खरपतवारों को दबाना:** मल्च की परत खरपतवारों के विकास को रोकती है, जिससे पौधों को पोषक तत्वों और पानी की बेहतर उपलब्धता होती है।
- **मिट्टी को ठंडा रखना:** गर्मियों में मल्चिंग मिट्टी को ठंडा रखने में मदद करती है, जिससे पौधों की जड़ों को अत्यधिक गर्मी से बचाया जा सकता है।
- **पोषक तत्व प्रदान करना:** जैविक मल्च धीरे–धीरे अपघटित होकर मिट्टी में मिल जाता है, जिससे मिट्टी को पोषक तत्व मिलते हैं।
- **मिट्टी की संरचना में सुधार:** मल्चिंग से मिट्टी की संरचना में सुधार होता है और उसमें जीवाणुओं की संख्या बढ़ती है, जो मिट्टी को उपजाऊ बनाते हैं।
- **मिट्टी का कटाव रोकना:** मल्च की परत मिट्टी को तेज बारिश और हवाओं से बचाती है, जिससे मिट्टी का कटाव कम होता है।

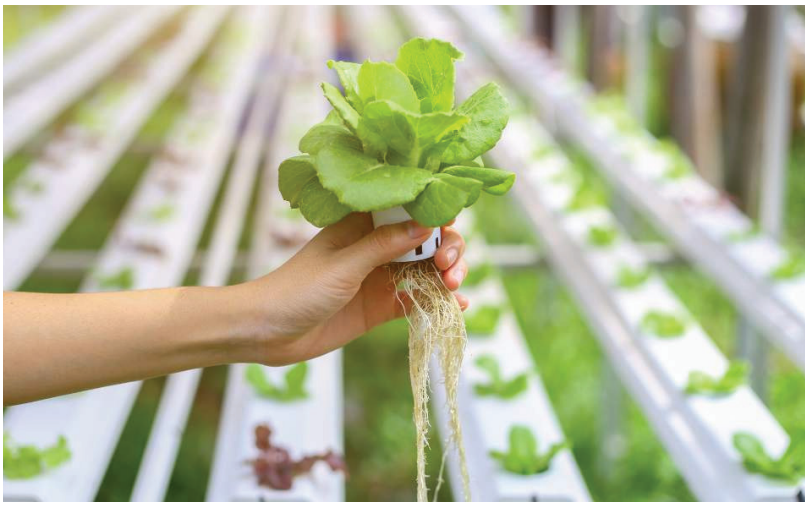

हाइड्रोपोनिक खेती विधि क्या है? भारत में हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

आज के आधुनिक युग में जहां हर क्षेत्र में नई तकनीक का आगमन हो रहा है, वहीं कृषि क्षेत्र में भी किसानों के लिए नई–नई तकनीकें विकसित की जा रही हैं। आधुनिक तकनीकों की मदद से न केवल खेती की उत्पादकता में वृद्धि होती है, बल्कि किसानों का काम भी आसान और कम समय में हो जाता है। हाइड्रोपोनिक्स तकनीक भी किसानों के लिए एक वरदान साबित हो सकती है। इस लेख में हम आपको इस तकनीक के बारे में संपूर्ण जानकारी देंगे।

हाइड्रोपोनिक्स का आविष्कार किसने किया?

विलियम फ्रेडरिक गेरिक को 1937 में हाइड्रोपोनिक्स तकनीक का जनक माना जाता है, जब उन्होंने अपने घर के बगीचे में 7.6 मीटर ऊंची टमाटर की लताएँ खनिज पोषक घोल में उगाईं। बर्कले, कैलि. फोर्निया विश्वविद्यालय में काम करते हुए, उन्होंने मिट्टी के बजाय पानी और पोषक तत्वों के घोल में पौधे उगाने का विचार लोकप्रिय बनाया।

हाइड्रोपोनिक खेती विधि क्या है?

हाइड्रोपोनिक खेती एक ऐसी विधि है जिसमें पौधों को मिट्टी रहित माध्यम में, आवश्यक पोषक तत्वों के घोल में उगाया जाता है। इस तकनीक का इस्तेमाल ज्यादातर बागवानी फसलों के लिए किया जाता है। हाइड्रोपोनिक्स में पौधों को आवश्यक पोषक तत्व जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटैशियम तरल रूप में प्रदान किए जाते हैं, जिससे उनकी वृद्धि होती है। ये तरल मिनरल सॉल्ट्स या घोल समुद्री शैवाल और अन्य जैविक सामग्रियों के मिश्रण से बनाए जाते हैं। इन पोषक तत्वों के घोल को पौधों की जड़ों में रासायनिक प्रवाह या टपक सिंचाई के रूप में दिया जाता है।

भारत में हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

भारत में हाइड्रोपोनिक्स खेती तेजी से लोकप्रिय हो रही है, और इसके कई लाभ हैं जो किसानों और कृषि उद्योग के लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं। यहां हाइड्रोपोनिक्स के प्रमुख लाभों का विवरण दिया गया है:

1. जल की बचत

हाइड्रोपोनिक्स खेती में पारंपरिक खेती की तुलना में 80–90% कम पानी की आवश्यकता होती है। इसमें पानी का पुनरू उपयोग होता है, जिससे जल की बड़ी बचत होती है। यह विशेष रूप से उन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है जहां जल की कमी है।

2. उच्च पैदावार

इस तकनीक से फसलों की पैदावार पारंपरिक खेती की तुलना में काफी अधिक होती है। पौधों को आवश्यक पोषक तत्व सीधे उपलब्ध होते हैं, जिससे उनकी वृद्धि तेज होती है और अधिक उत्पादन मिलता है।

3. कम जगह की आवश्यकता

हाइड्रोपोनिक्स खेती में कम जगह की आवश्यकता होती है, क्योंकि पौधों को एक नियंत्रित वातावरण में उगाया जाता है। यह शहरी क्षेत्रों और सीमित भूमि वाले स्थानों के लिए विशेष रूप से लाभकारी है।

4. नियंत्रित वातावरण

हाइड्रोपोनिक्स प्रणाली में तापमान, नमी, और पोषक तत्वों का स्तर नियंत्रित किया जा सकता है। इससे फसलों की वृद्धि पर बाहरी मौसम के प्रभाव को कम किया जा सकता है और साल भर खेती संभव हो जाती है।

5. मिट्टी की आवश्यकता नहीं

इस विधि में मिट्टी की आवश्यकता नहीं होती, जिससे मिट्टी से जुड़े रोगों और कीटों का खतरा कम हो जाता है। इससे पौधों की सेहत बेहतर होती है और फसलें अधिक स्वस्थ होती हैं।

6. कीटनाशकों का कम उपयोग

हाइड्रोपोनिक्स खेती में कीटनाशकों और रसायनों का कम उपयोग होता है, क्योंकि पौधे एक नियंत्रित वातावरण में उगते हैं और कीटों का खतरा कम होता है। इससे उपभोक्ताओं को अधिक स्वास्थ्यवर्धक और सुरक्षित खाद्य पदार्थ मिलते हैं।

7. फसल चक्र

इस विधि में फसलों का चक्र तेजी से होता है। फसलें जल्दी उगती हैं और जल्द ही कटाई के लिए तैयार हो जाती हैं, जिससे किसानों को अधिक बार और अधिक उत्पादन मिलता है।

8. पोषक तत्वों का सटीक प्रबंधन

हाइड्रोपोनिक्स में पोषक तत्वों का सटीक प्रबंधन संभव है। पौधों को आवश्यक पोषक तत्व सीधे और सही मात्रा में मिलते हैं, जिससे उनकी वृद्धि और गुणवत्ता में सुधार होता है।

9. स्थिरता और पर्यावरणीय लाभ

हाइड्रोपोनिक्स खेती अधिक स्थिर और पर्यावरण के अनुकूल होती है। इसमें जल की कम खपत, कम भूमि की आवश्यकता और कम रसायनों का उपयोग होता है, जिससे पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

10. रोजगार के अवसर

हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से नए कृषि उद्यमों और स्टार्टअप्स के लिए अवसर बढ़ते हैं। इससे रोजगार के नए अवसर पैदा होते हैं और कृषि क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहन मिलता है। इन सभी लाभों को देखते हुए, हाइड्रोपोनिक्स खेती भारत में कृषि के लिए एक प्रभावी और लाभकारी विकल्प साबित हो सकती है। यह न केवल किसानों के लिए मुनाफेदार हो सकती है, बल्कि देश की कृषि उत्पादन क्षमता और खाद्य सुरक्षा को भी बढ़ा सकती है।

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए किसानों को सरकार देगी 40% सब्सिडी, जल्दी करे आवेदन

देश के बहुत से किसान पारंपरिक खेती से दूर जाकर गैर–पारंपरिक खेती में काम कर रहे हैं। अधिकांश किसान फलों और फूलों की खेती पर जोर देते हैं और इसमें सफल होते हैं। लेकिन बागवानी करके अच्छा खासा मुनाफा कमाने के लिए विदेशी फलों की खेती अब किसानों के लिए एक बेहतर विकल्प बन गई है। ऐसे में किसानों की आय को बढ़ाने के लिए केंद्रीय और राज्य सरकारें विभिन्न कार्यक्रमों को लागू कर रही हैं। बिहार सरकार ड्रैगन फ्रूट की खेती करने वाले किसानों को चालीस प्रतिशत की अनुदान राशि दे रही है। आप इस कार्यक्रम का लाभ लेने के लिए ऑनला. इन आवेदन कर सकते हैं।

3 लाख तक का मिलेगा अनुदान

ड्रैगन फ्रूट विकास योजना, बिहार सरकार की श्मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजनाश के तहत राज्य के किसानों को अनुदान दे रही है। प्रति हेक्टेयर ड्रैगन फ्रूट खेती की लागत 7.50 लाख रुपये है। इस फ्रूट की खेती पर किसानों को 40 प्रतिशत, या 3 लाख रुपये तक का अनुदान दिया जाएगा।

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लाभ

सरकार ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए अनुदान दे रही है क्योंकि यह बहुत पोषक तत्वों से भरपूर है। यह कैक्टस प्रजाति का पौधा है और इसे खाने से पाचन तंत्र बेहतर होता है। इसमें अच्छी खासी मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो मधुमेह और कैंसर जैसे घातक रोगों को दूर करते हैं।

एक बार पौधे लगाने के बाद कई साल तक मिलेगा फायदे

ड्रैग फ्रूट को उगाने के लिए कोई विशेष वातावरण आवश्यक नहीं है। इस फल को किसान सामान्य तापमान और वर्षा के साथ आसानी से बो सकते हैं। एक सीजन में ही इसकी फसल तीन बार फल देती है और एक पौधा लगभग चालीस से पच्चीस फलों का उत्पादन करता है। एक एकड़ ड्रैगन फ्रूट खेत से आसानी से 8 से 10 लाख रुपये की कमाई हो सकती है। एक बार बुवाई के बाद किसान 18 से 20 वर्षों तक इसके पौधों से उपज प्राप्त कर सकते हैं।

3 किस्तों में आएगा अनुदान का पैसा

2 वर्ग मीटर की दूरी पर 1 हेक्टेयर में ड्रैगन फ्रूट की खेती करने वाले किसान को लगभग 5 हजार पौधों की आवश्यकता हो सकती है। किसानों को मुख्यमंत्री बाग. वानी मिशन योजना के तहत 3 किस्तों में अनुदान राशि दी जाएगी। किसानों को पहली किस्त में 60 प्रतिशत, यानी 1.80 लाख रुपये मिलेंगे। वहीं दूसरी और तीसरी किस्त में 20–20 प्रतिशत, यानी 60–60 हजार रुपये का अनुदान मिलेगा। किसानों को दूसरी और तीसरी किस्त मिलने के लिए खेतों में 75 से 90: पौधा जिंदा होना चाहिए।

ऑनलाइन करना होगा आवेदन

यदि आप भी ड्रैगन फ्रूट विकास योजना का लाभ लेना चाहते हैं, तो आपको ऑनलाइन आवेदन करना होगा। किसानों को पहले आओ, पहले पाओ के सिद्धांत पर इस योजना का लाभ मिलेगा। किसानों को ऑनलाइन आवेदन करते वक्त आधार कार्ड, जमीन की रसीद, किसान रजिस्ट्रेशन और फोटो सहित सभी आवश्यक कागजात साथ ले जाना होगा। ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए इस योजना का लाभ कम से कम 0.25 एकड़ और अधिकतम 10 एकड़ जमीन पर मिलेगा।

मिनी स्प्रिंकलर सेट लेने पर मिल रही बंपर सब्सिडी, जल्द करें आवेदन

देश में किसानों को सिंचाई की सुविधा देने के लिए सरकार कई सिंचाई संसाधनों और सिंचाई यंत्रों पर अनुदान देती है। इसके लिए सरकार प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई कार्यक्रम लागू कर रही है। इस कड़ी में मध्यप्रदेश सरकार ने राज्य के किसानों से मिनी स्प्रिंकलर सेट को सब्सिडी पर देने के लिए आवेदन मांगे हैं। ऐसे में किसान जो मिनी स्प्रिंकलर को सब्सिडी पर लगाना चाहते हैं, वे ऑनलाइन आवेदन करके योजना का लाभ ले सकते हैं। मध्यप्रदेश कृषि विभाग ने वर्ष 2024द्2025 के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत सिंचाई उपकरणों के लिए "मिनी स्प्रिंकलर सेट" लक्ष्य निर्धारित किए हैं। किसानों को इसके लिए 24 जून 2024 तक पोर्टल पर आवेदन करना होगा। विभाग ऑनलाइन लॉटरी निकालेगा प्राप्त आवेदनों से। इसके बाद चुने गए किसानों को योजना का लाभ मिलेगा।

मिनी स्प्रिंकलर सेट पर कितनी सब्सिडी मिलेगी

मध्यप्रदेश सरकार ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत मिनी स्प्रिंकलर सेट पर किसानों को सब्सिडी दी है। इसमें सरकार को किसानों के वर्ग और जोत श्रेणी के अनुसार अलग–अलग सब्सिडी देने का अधिकार है, जो 55 प्रतिशत तक हो सकता है। किसान ई–कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर सब्सिडी कैलकुलेटर उपलब्ध है, जो किसानों को मिनी स्प्रिंकलर सिंचाई यंत्र की लागत के अनुसार मिलने वाली सब्सिडी की जानकारी दिखाता है।

योजना में आवेदन करने के लिए आवश्यक दस्तावेज

- किसानों को आवेदन के समय और लॉटरी में चयन के बाद क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा सत्यापन के दौरान कुछ दस्तावेजों की आवश्यकता होगी। जो की निम्नलिखित हैरू
- आधार कार्ड की कॉपी,
- बैंक पासबुक के प्रथम पृष्ठ की कॉपी,
- बिजली कनेक्शन का प्रमाण पत्र (जैसे बिजली बिल)
- सक्षम अधिकारी द्वारा जारी जाति प्रमाण पत्र (केवल अनुसूचित जाति एवं जनजाति के किसानों हेतु),
- बी–1 की प्रति,

योजना में आवेदन करने के लिए आवेदन प्रक्रिया

मध्यप्रदेश में किसानों को मिनी स्प्रिंकलर सेट अनुदान पर लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन करना होगा। इच्छुक किसान योजना का लाभ लेने के लिए ऑनलाइन म–कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर आवेदन कर सकते हैं। जो किसान पहले से पोर्टल पर पंजीकृत है वे आधार व्ज्च के माध्यम से लॉगिन कर आवेदन प्रस्तुत कर सकते है। वहीं नये किसानों को आवेदन करने से पूर्व बायोमैट्रिक आधार अथेन्टिकेशन के माध्यम से पंजीयन कराना अनिवार्य होगा। पोर्टल पर पंजीयन शुरू हो गया है। कृषक यह आवेदन अपने नजदीकी डच ऑनलाइन से या ब्ब् सेंटर से कर सकते हैं। आप किसान पोर्टल पर योजना से जुड़ी अधिक जानकारी देख सकते हैं या अपने ब्लॉक या जिले के कृषि विभाग कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

- पारंपरिक से जैविक खेती की ओर बढ़ने के पहले कई वर्षों में, इसमें उच्च इनपुट लागत और कम उपज होती है। चूँकि व्यावसायिक रूप से उपलब्ध जैव–खाद उत्पाद पूरी तरह से प्राकृतिक नहीं हो सकते हैं, वे प्रमाणन प्रक्रिया में विफल हो सकते हैं।
- किसानों को प्रभावित करने वाली मुख्य चुनौतियाँ प्रमाणन की उच्च लागत, धीमी प्रमाणन प्रक्रिया और इसका समर्थन करने के लिए संसाधनों की कमी हैं।
- हालाँकि किसान स्व–प्रमाणन भागीदारी गारंटी प्रणाली (पीजीएस–इंडिया) से सरकारी सब्सिडी प्राप्त करते हैं, लेकिन इन किसानों को अपने द्वारा उत्पादित उत्पादों को निर्यात करने का कोई अधिकार नहीं है।
- सरकार जैविक खाद और कीटनाशकों सहित जैविक खेती में उपयोग किए जाने वाले कृषि उत्पादों के लिए सब्सिडी प्रदान करने में विफल रहती है, जिससे विनिर्माण प्रक्रिया की लागत बढ़ जाती है।
- जैविक उत्पादन के असामान्य रूप से छोटे पैमाने के कारण जैविक खाद्य पदार्थों की बिक्री और वितरण श्रृंखला बेहद महंगी और अक्षम है।
- जैविक कृषि क्षेत्र को प्रभावित करने वाले कुछ मुख्य मुद्दे स्थानीय बाजारों और उत्पादों के लिए जैविक योजना की कमी है। जैविक खेती प्रक्रिया और लोगो के लिए लेबलिंग आवश्यकताओं के नियमों के अभाव में किसी सामान्य उत्पाद से जैविक वस्तु को पहचानना असंभव है। इसका परिणाम बेईमान व्यवहार होता है जिसमें व्यक्तियों का पैसा खर्च होता है क्योंकि उन्हें उचित मुआवजा नहीं मिलता है।

जैविक खेती को बढ़ावा देने के तरीके

1. शिक्षा और जागरूकता

किसानों और आम जनता को जैविक खेती के लाभों जैसे मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार, हानिकारक पदार्थों के उपयोग में कमी और बेहतर फसल पोषण के बारे में शिक्षित करना।

2. सरकारी प्रोत्साहन और नीतियां

सरकारों के पास ऐसे कानून बनाने का अधिकार है जो जैविक खेती को प्रोत्साहित करते हैं, जैसे कि वे जैविक खेती अपनाने वाले किसानों को मुआवजा लाभ या भुगतान प्रदान कर सकती हैं। इससे किसानों की जैविक खेती अपनाने की क्षमता बढ़ सकती है।

3. अनुसंधान और विकास के लिए समर्थन

जैविक खेती के तरीकों पर अध्ययन में निवेश करने से नई तकनीक और कृषि के बेहतर तरीकों का विकास हो सकता है जो अधिक लाभदायक और कुशल बन जाते हैं।

4. बाजारों तक पहुंच

जैविक उत्पादकों को अपनी उपज बेचने के तरीके उपलब्ध कराने से ग्राहकों की ओर से जैविक उत्पादों की मांग बढ़ेगी और अधिक किसानों को जैविक खेती के तरीकों पर स्विच करने के लिए बढ़ावा मिलेगा।

5. सामुदायिक भागीदारी

सामान्य आबादी के बीच जैविक खेती के लिए पहचान और समर्थन के बारे में जागरूकता विकसित करने से निर्माताओं को मदद के रिश्ते विकसित करने में मदद मिल सकती है। जैविक खेती और कृषि को बढ़ावा देने के लिए इन तरीकों का उपयोग करके भविष्य के लिए पर्यावरण की दृष्टि से स्वस्थ खाद्य प्रणाली विकसित की जा सकती है।

Coromandel
FUTURE POSITIVE
Ab sab
Fit hai!
GROMOR
FITSOL™
Complete nutrition with
just 2 Fertigation grades
GROMOR
FITSOL™
SOLANACEAE
GRADE-1
VEGETATIVE & FLOWERING
21
12
16
2
25 Kg
Coromandel
GROMOR
FITSOL™
SOLANACEAE
GRADE-2
FRUITING & MATURITY
14
5
32
2
25 Kg

मेरीखेती ने जुलाई माह की किसान पंचायत का आयोजन ब्रजधाम फार्म में किया

मेरीखेती ने मासिक किसान पंचायत का आयोजन इस बार अलग और रचनात्मक ढ़ंग से किया है। इस बार जुलाई माह की मेरीखेती किसान पंचायत का आयोजन ब्रजधाम फार्म्स नौहझील (मथुरा) में मास्टर रोशन सिंह प्रधान जी की अध्यक्षता में संपन्न की गई। इस भव्य किसान पंचायत की चर्चा का मुख्य विषय पौधरोपण का महत्त्व और इसके प्रति जागरुकता को बढ़ाना रहा। किसान पंचायत में इस वर्ष भीषण गर्मी और तापमान में रिकॉर्ड बढ़ोतरी को लेकर सजगता बरतने व इससे बचाव के संभव प्रयासों पर विचार विमर्श किया गया। मेरीखेती किसान पंचायत का प्रमुख उद्देश्य किसानों की आर्थिक उन्नति के लिए योजनाओं पर मिलने वाले सभी लाभों की जानकारी के साथ–साथ उत्तम जीवनशैली भी होता है। इसलिए ब्रजधाम फार्म्स में काफी संख्या में प्रगतिशील किसानों ने पौधरोपण करके धरती माँ की हरियाली को बरकरार रखने के लिए स्वयं पौधरोपण करने के साथ ही अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया।

किसान पंचायत में मास्टर छेदालाल पाठक जी, अमीचंद मास्टर जी, देवेंद्र पाठक, अनिल मास्टर, अशोक पाठक, प्रेम, ब्रजेश प्रधान, अतुल पाठक, फर्जन्द डाक्टर, अख्तर मुखियाजी, बच्चू पंडित, गुड्डा प्रधान, मनोज पाठक, धर्मेंदर पाठक, दयाराम पाठक, सोनेश पाठक और विपिन पाठक समेत बहुत सारे प्रगतिशील किसानों ने बढ़–चढ़कर पौधरोपण अभियान में हिस्सा लिया। मेरीखेती किसान पंचायत के वृक्षारोपण अभियान में मेरीखेती वेबसाइट के कॉ–फाउंडर कृष्ण पाठक जी ने भी हर्षोल्लास के साथ पौधरोपण किया। किसान पंचायत में मौजूद युवा एवं बुजुर्ग प्रगतिशील किसानों को अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण हमारी आने वाली पीढ़ी पर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालेगा। इसलिए हमें भारत की हरी भरी प्राकृतिक विरासत को सहजने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

श्यामा तुलसी की खेती से चमकेगी बुंदेलखंड के किसानों की किस्मत

बुंदेलखंड के किसानों की किस्मत श्यामा तुलसी की खेती से बदल रही है। तुलसी की बढ़ती मांग के कारण इस साल क्षेत्र में इसकी खेती का विस्तार हुआ है। पिछले साल तुलसी की खेती 2800 एकड़ में की गई थी, जो इस साल बढ़कर 6000 एकड़ हो गई है। अधिकारियों की योजना है कि बुंदेलखंड को तुलसी उत्पादन का हब बनाया जाए, ताकि आयुर्वेदिक कंपनियों को आकर्षित किया जा सके।

बुंदेलखंड की मिट्टी तुलसी की खेती के लिए उपयुक्त

बुंदेलखंड की मिट्टी श्यामा तुलसी के लिए बहुत उपयुक्त है। कम लागत और अन्ना जानवरों से फसलों को होने वाले नुकसान के कारण किसान तेजी से तुलसी की खेती की ओर रुख कर रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, श्यामा तुलसी की बुवाई में कम लागत आती है और इसे अन्ना जानवरों से नुकसान नहीं होता। साथ ही, इसे सिंचाई के लिए ज्यादा पानी की भी आवश्यकता नहीं होती। इन सभी कारणों से बुंदेलखंड के किसान इसे आसानी से अपना रहे हैं। उद्यान अधिकारियों के अनुसार, वर्ष 2015 में बुंदेलखंड में कुछ ही किसान श्यामा तुलसी की खेती कर रहे थे, लेकिन अब यह संख्या हजारों में पहुंच गई है। जालौन और ललितपुर में भी लगभग साढ़े चार सौ किसान इस खेती में शामिल हैं। झांसी में पिछले साल 2820 एकड़ में तुलसी की बुवाई हुई थी और इस साल यहां खेती का क्षेत्रफल बढ़ाया जा रहा है। बंगरा और गुरसराय में तुलसी उत्पादन का लक्ष्य भी बढ़ाया गया है।

प्रोसेसिंग प्लांट की हो रही है स्थापना

बुंदेलखंड में तुलसी के उत्पादन की वृद्धि से यहां प्रोसेसिंग प्लांट की स्थापना भी की जा रही है। उद्यान विभाग के सहायता से बंगरा में एक प्लांट लगाया जा रहा है, जिससे तुलसी के तेल सहित अन्य औषधीय उत्पाद तैयार किए जा सकेंगे। कई जानी–मानी आयुर्वेदिक कंपनियां इस्तेमाल के लिए तुलसी को सीधे किसानों से खरीद रही हैं। तुलसी की खेती सिर्फ 70 दिनों में हो जाती है और इसकी लागत भी कम होती है, जिसके कारण किसानों में इसमें बढ़ती हुई रुचि देखने को मिल रही है।

आसानी से बेच सकते है तुलसी

कृषि विश्वविद्यालय बांदा के सहायक अध्यापक एस तोमर बता रहे हैं कि तुलसी की खेती में डाबर और आर्गेनिक इंडिया जैसी नामी कंपनियां बुंदेलखंड के कई जिलों में समूह के रूप में किसानों से उपज करवा रही हैं। ये कंपनियां किसानों को बीज प्रदान कर रही हैं और उनके उत्पाद (पत्तियाँ और तेल) को घर बैठे उचित मूल्य पर खरीद रही हैं। एक एकड़ में लगभग 40 लीटर तुलसी तेल निकलता है, और प्रति लीटर कंपनी 1200 रुपये में तेल खरीद रही है।

देवघर की बीणा ने कहा ड्रोन दीदी बनकर पूरा हुआ उनका लखपति बनने का सपना

झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं ड्रोन दीदी बनकर अपने सपनों में नई उड़ान भर रही है। इसके जरिए ना सिर्फ वो राज्य के कृषि की तस्वीर बदल रही है बल्कि आर्थिक तौर पर सशक्त बनकर घर और समाज में अपना अलग और खास स्थान बना रही है। झारखंड के देवघर जिला अंतर्गत पालाजोरी प्रखंडी की पहली ड्रोन दीदी बीणा कुमारी भी उन्हीं दीदियों में से एक है जो ड्रोन के जरिए अपने जीवन को और बेहतर बनाने के साथ कृषि और किसानों को आगे बढ़ाने में मदद कर रही है। बीणा कुमारी बतातीं है कि अभी ड्रोन चलाने में वो एक्सपर्ट नहीं हुई हैं इसलिए घर के खेतों में छिड़काव करके अच्छे से सीख रही हैं, इसके बाद दूसरे किसानों के खेत में छिड़काव करने का कार्य शुरू करेंगे। पोखरिया गांव के किसान भी खुश हैं कि उनके खेत में कीटनाशक और दवाओं का छिड़काव नहीं करना पड़ेगा। ध्यान दें कि देवघर का पालाजोरी खेती के लिए प्रसिद्ध है। 25 पंचायतें जमकर खेती करती हैं। वर्तमान में, प्रखंड के एफपीओ पालाजोरी फार्मस प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड में 600 किसान शामिल हैं। अब इन किसानों के खेतों में छिड़काव करने में कोई समस्या नहीं होगी। बीणा कुमारी अभी ड्रोन चलाने में पूरी तरह से परिपक्व नहीं हुई है।

इंटरव्यू के जरिए किया गया चयन

बीणा कुमारी ने ग्रामीण विकास में मास्टर डिग्री हासिल की थी, लेकिन उसे नौकरी नहीं मिली, इसलिए वह स्वयं सहायता समूह में शामिल हो गई। ड्रोन दीदी के चयन पर चर्चा करते हुए बीणा कुमारी ने बताया कि उनके साथ तीन और महिलाओं को जेएलएपलीएस कार्यालय देवघर बुलाया गया था। जहां वे इंटरव्यू के बाद चुनी गई। चयनित लोगों को ट्रेनिंग के लिए पूसा समस्तीपुर भेजा गया। फिर तीन दिनों की ट्रेनिंग रांची में हुई। इसके बाद मोतीहारी में शिक्षा ली गई। जनवरी 2024 में बीणा कुमारी एक ड्रोन दीदी बन गई।

ड्रोन के इस्तेमाल के फायदे

पालाजोरी फार्मस प्रोड्यूसर कंपनी में अकाउंटेंट के पद पर काम करने वाली बीणा कुमारी कहती है कि उनके क्षेत्र की कृषि में ड्रोन की मदद से बदलाव आ सकता है। क्योंकि ड्रोन का उपयोग पानी, समय और कीटनाशक बचाता है। एक एकड़ में छिड़काव 7 से 8 मिनट लगता है। ड्रोन का उपयोग करने का एक अतिरिक्त लाभ यह है कि यह खेत में छिड़काव करने में सरल और प्रभावी होता है। इसमें दवा या कीटनाशक बर्बाद नहीं होते। बूंदे छोटी होने के कारण पत्तियों पर चिपक जाती हैं, जिससे अधिक पौधों को लाभ मिलता है।

ताकत, किफायत और भरोसे के साथ
प्रीत सुपर ही है
सबसे ऊपर
PREET
SUPER
9049 4WD
PREET
PREET
#BetterFutureIsHere

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010